रजिस्ट्री सं० डी-222 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 12, 1969 (चैत्र 22, 1891)

No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 12, 1969 (CHAITRA 22, 1891)

CENTRAL SECRETARIAT LIBRARY APR 1969 GOVERNMENT OF INDIA

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस

(NOTICE)

नीचे लिखा भारत का असाधारण राजपत्र 11 मार्च 1969 तक प्रकाशित किया गया है :—

The undermentioned *Gazette of India Extraordinary* was published up to the 11th March 1969 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
31	No. 42-ITC(PN)/69, dt. 11-3-69	Min. of Foreign Trade & Supply	Import Policy for Registered Exporters for the year April 1968—March 1969

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these *Gazettes*.

11GI/69

विषय-सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	315
भाग I—खंड 2—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	403
भाग I—खंड 3—रक्षा मन्त्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	13
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	323
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उप-खंड (1)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1021
भाग II—खंड 3—उप-खंड (2)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	1283
भाग II—खंड 4—रक्षा मन्त्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	119
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	359
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	135
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	47
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	211
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	65
पूरक संख्या 15—	
28 मार्च 1969 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी सम्बन्धी साप्ताहिक रिपोर्ट	605
15 मार्च 1969 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बिमारियों से हुई मृत्यु से सम्बन्धित आंकड़े	621

	Page
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	315
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	403
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	13
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	323
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules, (including orders, bye-laws, etc., of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	1021
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	1283
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	119
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	359
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	135
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	47
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	211
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	65
SUPPLEMENT No. 15—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 28th March 1969 ..	605
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 15th March 1969	621

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम् न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, 26 जनवरी 1969

सं० 11-प्रेज़/69—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

लेफ्टिनेंट जनरल अप्रेन्दा चेंगप्पा ऐयप्पा,
(आई० सी०–89) सिगनल्स (रिटायर्ड)
लेफ्टिनेंट जनरल विद्यापति भट्टाचार्य,
(एम० आर०–147) आर्मी मेडिकल कोर
लेफ्टिनेंट जनरल गोपाल गुरुनाथ बेवूर,
(आई० सी०–129) इन्फेंट्री
लेफ्टिनेंट जनरल राजिन्दर सिंह पैंटल,
(आई० सी०–125) इन्फेंट्री
मेजर जनरल पनावलिल थोमस जोसफ,
(एम० आर०–150) ए० वी०एस०एम० आर्मी मैडिकल कोर
मेजर जनरल इन्दरजीत सिंह गिल,
(आई० सी०–1641) एम० सी० इन्फेंट्री
रियर ऐडमिरल केसवापिलाई रामाकृष्णन नायर,
इंडियन नेवी
एयर वाइस मार्शल हरि चन्द दिवान,
(1598) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)
एयर वाइस मार्शल तेजा सिंह विर्क,
(1621), जनरल ड्यूटीज़ (नेवीगेटर)

सं० 12-प्रेज़/69—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "अति विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

एयर वाइस मार्शल सय्यद अब्बास हुसेन,
(1706) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)
ब्रिगेडियर मावलिकरा रवी वर्मा,
(आई० सी०–5613) इन्फेंट्री
ब्रिगेडियर अबन नायडू,
(आई० सी०–717) इन्फेंट्री
ब्रिगेडियर करम सिंह,
(आई० सी०–1274) वीर चक्र आर्मर्ड कोर
ब्रिगेडियर गुरदयाल सिंह,
(आई० सी०–621) आर्टिलरी
ब्रिगेडियर आदि कैखुसरू साहुकार,
(आई० सी०–1081) आर्मी सर्विस कोर
ब्रिगेडियर दिलजीत सिंह विर्क,
(आई० ई० सी०–1447) आर्मी पोस्टल सर्विस
ब्रिगेडियर ओम प्रकाश दत्ता,
(आई० सी०–857) इंजीनियर्स
ब्रिगेडियर लेसली हरिक रिजिनाल्ड बोनावेन्चर फेरिस,
(आई० सी०–471) गोरखा राईफल्स
ब्रिगेडियर कलू जभेरमल साहनी,
(आई० सी०–1631) इंजीनियर्स
ब्रिगेडियर बन्त सिंह,
(आई० सी०–5249) इन्फेंट्री
ब्रिगेडियर रघुनाथ सिंह हून,
(एम० आर०–235) आर्मी मैडिकल कोर
ब्रिगेडियर आगा कुम्बर अली,
(आई० सी०–1944)
ब्रिगेडियर दिनकर कृष्ण चन्दोरकर,
(आई० सी०–3343) राजपूताना राईफल्स
एयर कमोडोर आनन्द रामदास पन्डित, डी० एफ० सी०,
(1707) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)
एयर कमोडोर हेमन्तो कुमार बोस,
(2348) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)
एयर कमोडोर सरोश जहांगीर दस्तूर,
(1792) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)
एयर कमोडोर थिरुमलाई श्रीनिवासन,
(2416) टेक्निकल/सिगनल्स
एयर कमोडोर तपेश्वर बसू,
(1797) जनरल ड्यूटीज़ (नेवीगेटर)
कर्नल गोपाल बसुदेव चपहेकर,
(एम० आर०–270) आर्मी मैडिकल कोर
कर्नल आनन्द विनायक मजुमदार,
(आई० सी०–3757) जज ऐडवोकेट जनरल डिपार्टमेंट
कैप्टन गारनेट मिल्टन शिया,
इंडियन नेवी
कैप्टन विवीयन इरिक चार्ल्स बरबोजा,
इंडियन नेवी
कैप्टन कृष्ण देव (एस),
इंडियन नेवी

ग्रुप कैप्टन सीता राम मलिक,
(2654) ऐडमिनिस्ट्रेटिव एण्ड स्पेशल ड्यूटीज़

सं० 13-प्रेज़/69—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित उच्च कोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

कर्नल तिलक राज चावला,
(आई० सी०–1968) आर्टिलरी
कर्नल गुरदियाल सिंह वेदी,
(आई० सी०–1975) इलैक्ट्रिकल मैकेनिकल इंजीनियर्स
कर्नल अनवर हुसैन,
(आई० सी०–812) आर्मी औडनेन्स कोर
कर्नल रसमय गंगूली,
(एम० आर०–499) आर्मी मैडिकल कोर
लेफ्टिनेंट कर्नल जौन जोसफ फोन्सेका,
(एस० एल०–301) आर्मी फीज़ीकल ट्रेनिंग कोर
लेफ्टिनेंट कर्नल वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य,
(आई० सी०–5699) मद्रास,
लेफ्टिनेंट कर्नल मनोहर लाल आनन्द,
(आई० सी०–4641) इलैक्ट्रिकल मैकेनिकल इंजीनियर्स
लेफ्टिनेंट कर्नल मथुम्मल गोविन्दन,
(आई० सी०–9244) इन्टेलिजेन्स कोर
लेफ्टिनेंट कर्नल प्राण नाथ आनन्द,
(आई० सी०–4577) आसाम राईफल्स,
लेफ्टिनेंट कर्नल जोगिन्दर सिंह घराया,
(आई० सी०–1984) के० सी० बिहार
लेफ्टिनेंट कर्नल अरुण चौधरी,
(आई० सी०–4631) इंजीनियर्स,
कमांडर जयन्त गणपत नवकरनी,
इंडियन नेवी
कमाण्डर कृष्णस्वामी सुब्रामनियन,
इंडियन नेवी
ऐक्टिंग कमांडर सुब्रामनियम कालिदास,
इंडियन नेवी
एक्टिंग कमांडर मोहम्मद हनीफ उस्मान खान,
इंडियन नेवी
ऐक्टिंग कमांडर ओम प्रकाश शर्मा,
इंडियन नेवी
ऐक्टिंग कमांडर अमरेश्वर नाथ ठकराल,
इंडियन नेवी
विंग कमाण्डर वर्दा केगेन्द्र सुन्दरा राव,
(3267) इक्विपमेंट
विंग कमाण्डर विद्यासागर लखनपाल,
(3706) इक्विपमेंट
विंग कमांडर बंगलौर मधावरया उम्बरकोमन,
(2662) एकाउन्ट्स (रिटायर्ड)
विंग कमाण्डर दिनकर विश्वनाथ देशपांडे,
(4305) मैट्रोलोजिकल
विंग कमांडर चन्द्रमोलेश्वरन,
(3796) टेक्निकल/सिगनल्स
विंग कमांडर वसन्त मारुतिराव वार्ती,
(4059) टेक्निकल/सिगनल्स
विंग कमांडर एरासरी पाथेयपुरा राधाकृष्णन नायर,
(3837) जनरल ड्यूटीज़ (नेवीगेटर)
मेजर भुवनेश्वरी प्रसाद बाजपाई,
(आई० सी०–8271) इंजीनियर्स
मेजर हिरन कुमार सरकार,
(एम० आर०–1434) आर्मी मैडिकल कोर
लेफ्टिनेंट कमांडर अरिन्दम घोष,
इंडियन नेवी
लेफ्टिनेंट कमांडर महेन्द्र पाल बधावन,
इंडियन नेवी
स्क्वाड्रन लीडर परदुमन कुमार जैन,
(4366) एडमिनिस्ट्रेटिव एण्ड स्पेशल ड्यूटीज़
कैप्टन ब्रिजेन्द्र किशोर गुहा राय,
(एस० एल०–478) स्पैशल लिस्ट
कैप्टन धोन्डुप वांग्याल लामा,
(आई० सी०–18303) आर्टिलरी
कैप्टन अमोद कुमार गुप्ता,
(एम० 31071) आर्मी मैडिकल कोर
14031 सूबेदार मेजर इशोरी दत्त छेत्री,
आसाम राईफल्स,
जे० सी०–6618 सूबेदार (सर्जिकल असिस्टेंट) वेद प्रकाश मेहता,
आर्मी मेडिकल कोर
जे० सी०–26563 सूबेदार (ऐम्बूलैन्स असिस्टेंट) वामन,
आर्मी मैडिकल कोर
जे० सी०–12094 सूबेदार लक्ष्मी दत्त,
इंटेलिजेन्स कोर
जे० सी०–29367 सूबेदार नेथाट बालाकृष्णन नायर,
सिगनल्स
टी० जे०–974 सूबेदार सी० जे० जोसफ,
टैरिटोरियल आर्मी
करतार सिंह सलारिया,
चीफ एयरक्राफ्ट हैन्डलर (नम्बर 35548)
पुलिकल मनायलिल मोहम्मद,
चीफ पैटी अफसर कुक (एस) (नम्बर 35341)
के० एम० दामोदरम नायर,
स्टोर्स चीफ पैटी अफसर, (नम्बर, 31299)
संकरन थम्पी नारायनन नायर,
चीफ पैटी अफसर (नम्बर 33845)
धीरेन्द्र नाथ चक्रवर्ती,
चीफ पैटी अफसर (नम्बर 34014)
थनायनचुरी शंकरन नायर,
चीफ पैटी अफसर (नम्बर 35813)
पिल्लापेडी कुन्ही कानन,
चीफ पैटी अफसर (नम्बर 10241)
20742 मास्टर वारंट अफसर माविलाकान्डी नारायनन,
क्लर्क जी० डी०

6437763 दफादार कैबल मलिकी,
आर्मी सर्विस कोर
204738 सार्जन्ट महेश नाथ भान,
फिटर II इंजिन्स
400594 सार्जन्ट सय्यद मुनीरुद्दीन,
फिट आरमर
218931 कारपोरल वेट्टीकुजिल सकारिया चक्कू सकारिया,
फिटर मैकेनिकल ट्रान्सपोर्ट
215745 कारपोरल मुबकानामाचारिल वरके जोसफ,
वायरलैस आपरेटर मैकेनिक्स (1)

सं० 14-प्रेज/69—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री बाबू सिंह
2. श्री राम नाथ
3. श्री विश्वनाथ सिंह
4. श्री महादेव सिंह
5. श्री काशीराम सिंह
6. श्री अजब सिंह
7. श्री राम भरोसे

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 अक्तूबर 1967)

21 अक्तूबर, 1967 को कुख्यात डाकू नाथू सिंह ने अपने 12-13 साथियों सहित मध्य प्रदेश के बिन्दवा ग्राम में प्रवेश किया तथा बाबू सिंह और उसके रिश्तेदारों के घरों को घेर लिया। एक सुस्थिति से डाकुओं ने बाबू सिंह के मकान पर गोलियां चलाना आरम्भ कर दिया तथा दो अन्य ग्रामीणों के घरों को भी जला दिया। सर्वश्री बाबू सिंह, राम नाथ, विश्वनाथ सिंह, महादेव सिंह, काशीराम सिंह, अजब सिंह तथा राम भरोसे ने बचाव कार्य किया और उन्होंने अपनी लाइसेंस-शुदा बन्दूकों, पत्थरों और ईंटों से डाकू-दल का डट कर मुकाबला किया तथा उनमें से एक को घायल कर दिया डाकू स्टेनगन, स्वचालित राईफलें इत्यादि से लैस थे परन्तु वे ग्रामीणों के समक्ष न ठहर सके और भाग गये।

इस कार्यवाही में सर्वश्री बाबू सिंह, राम नाथ, विश्वनाथ सिंह, महादेव सिंह, काशीराम सिंह, अजब सिंह और राम भरोसे ने उत्कृष्ट वीरता तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

8. कैप्टन श्रीराम राजू कोसरी (ई० सी०—55333)
आसाम राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 नवम्बर, 1967)

18 नवम्बर, 1967 को ब्रिगेड कमांडर ने कैप्टन श्रीराम राजू कोसरी को सूचित किया कि उपद्रवी एक पुलिस चौकी को नष्ट करने के पश्चात मीजो पहाड़ी क्षेत्र के एक स्थान पर ठहरे हुए हैं। उपद्रवियों की स्थिति पर आक्रमण करने के आदेश मिलने पर वे अपने लोगों के साथ उस जगह पर पहुंचे उपद्रवियों ने तीन विभिन्न स्थानों से आठ हल्की मशीनगनों तथा दूसरे छोटे हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। थोड़ी देर की आमने सामने की लड़ाई के पश्चात उपद्रवी, जिनकी संख्या 100 से अधिक थी, 4 मृतक और बहुत से हथियार तथा गोलाबारूद छोड़कर भाग गये।

इस कार्यवाही में कैप्टन श्रीराम राजू कोसरी ने उत्कृष्ट वीरता तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

9. 4240221 सिपाही गोरख नाथ सिंह,
बिहार रेजिमेन्ट **(मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 मार्च, 1968)

20 मार्च, 1968 को लगभग 16–30 बजे मीजो पहाड़ियों में पैदल सेना की एक टुकड़ी पर उपद्रवियों द्वारा घात लगाई गई। सिपाही गोरख नाथ सिंह जो कि प्रथम सेक्शन में थे, अन्य लोगों के साथ घायल हो गए, परन्तु इससे विचलित हुए बिना उन्होंने उपद्रवियों की स्थिति पर ग्रेनेडों से फायर करना जारी रखा। फिर वे रेंगते हुए अपने साथी के पास गये जो घायल हो गया था। उपद्रवियों की भारी गोलाबारी की परवाह किये बिना उन्होंने घायल साथी की मरहम्म-पट्टी की और उससे ग्रेनेड लेकर उपद्रवियों के विरुद्ध इस्तेमाल किये। तब वह उस स्थान तक रेंग कर गये जहां पर टुकड़ी का नेता गिरा हुआ था। और उससे ग्रेनेड लेकर उपद्रवियों पर फायर किया। इस बीच उपद्रवियों ने अपनी गोलाबारी उन पर केन्द्रित कर दी। जिसके फलस्वरूप वे घटनास्थल पर ही मारे गये।

इस कार्यवाही में सिपाही गोरख नाथ सिंह ने अनुकरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

10. 6356426 लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास
आर्मी सर्विस कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 मई, [1968)

11 मई 1968 को लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास तथा आर्मी सप्लाई कोर कम्पनी के चार जवानों सहित इण्डियन एयर फोर्स के एक डकोटा से मीजो पहाड़ियों में एक चौकी पर सामग्री गिराने के लिए उड़े। उड़ान के तुरन्त बाद वायुयान के इन्जन में खराबी हो गई और वायुयान नीचे आने लगा। इस बात का अनुभव करते हुए कि वायुयान किसी भी क्षण ध्वंस हो सकता था, लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास ने अपने आदमियों को एमरजेन्सी क्रैश ड्रिल का आदेश दिया। उन्होंने स्वयम् अपने आदमियों का नेतृत्व किया तथा सामान को निकालने और गिराने का कार्य शुरू किया विमान दुर्घटना के पश्चात् कर्मीदल आश्चर्य-जनक रूप से बच गया तथा उसको मामूली चोटें आईं। लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास ने शीघ्र ही बचाव कार्य के लिए अपने आदमियों का संगठन किया। कर्मीदल का कमरा जिसमें वायुसेना के 4 अफसर फंसे हुए थे, आग की लपटों से घिरा हुआ था। लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना ही वायुसेना के कर्मी-दल को बाहर निकालने के लिए जलते हुए कमरे में दाखिल हुए। वे दो अफसरों को, जिनकी बर्दियां जल रही थीं, बेहोशी की हालत में बाहर निकालने में सफल हुए। वे जलते हुए कर्मीदल के कमरे में तब तक आते-जाते रहे जब तक कि हाथ, चेहरा और शरीर के बुरी तरह जल जाने के कारण वे बेहोश नहीं हो गए। एक

कठिन परिस्थिति में लांस नायक जीतेन्द्र विश्वास के पहल तथा धैर्यपूर्ण साहस ने कई मूल्यवान जानों को बचाया ।

11. 8013933 पायनियर मूल सिंह
पायनियर कोर (**मरणोपरांत**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 अक्तूबर, 1968)

5 अक्तूबर, 1968 की रात्रि को उस एक टुकड़ी के तमाम लोग अपने कैम्प में सो रहे थे जिसे अभ्यास में भाग लेने के लिए भेजा गया था । पायनियर मूल सिंह संतरी ड्यूटी पर थे । मूसलाधार वर्षा हो रही थी और घोर अंधेरा था । पायनियर मूल सिंह ने कैम्प की ओर लुढ़कती हुई किसी चीज की आवाज सुनी । भूमि-स्खलन का अनुभव करते हुए शीघ्र ही उन्होंने चेतावनी दी और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा करते हुए उन्होंने स्वयम् ही आदमियों को उनके बिस्तरों से खींचना शुरू किया । वे तब तक लगातार ऐसा करते रहे जब तक भू-स्खलन के नीचे दबकर उनकी मृत्यु न हो गई । इस दुर्घटना में 26 पायनियर मारे गए तथा 28 घायल हुए । बचे हुओं में से 8 आदमियों को पायनियर मूल सिंह ने निकाला तथा 18 आदमी उनके जगाये जाने से सुरक्षित स्थान तक पहुंचने में सफल हुए ।

इस कार्यवाही में पायनियर मूल सिंह ने उत्कृष्ट वीरता तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

सं० 15-प्रेज०/69—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. 1510420 लांस हवलदार मुख्तयार सिंह
इंजीनियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—29 जनवरी, 1968)

लांस हवलदार मुख्तयार सिंह उस इंजीनियर रेजिमेंट में कार्य कर रहे थे जिसे एक नदी पर एक विशेष प्रकार का बेली निलम्बित पुल बनाने के लिये तैनात किया गया था । एक मोड़ पुल नदी में गिर गया था और उसे निकालने का कार्य चल रहा था । 29 जनवरी, 1968 को भारी वर्षा के कारण नदी तेजी से बढ़ने लगी तथा मोड़ पुल के बह जाने का अन्देशा हो गया । लांस हवलदार मुख्तयार सिंह ने पुल को निकालने के काम के लिये अपने को अर्पण किया तथा एक जे० सी० ओ० के साथ नाव में पुल की ओर बढ़े । नाव भंवरघार में फंस गई और जे० सी० ओ० बहने लगा । लांस हवलदार मुख्तयार सिंह ने जे० सी० ओ० को बचाने का प्रयत्न किया किन्तु अफसल रहे । इस बीच डूबता हुआ जे० सी० ओ० पुल के साथ अटक गया । खतरे का संकेत दिया गया तथा बचाव दल गठित किया गया । लांस हवलदार मुख्तयार सिंह ने, जो तब तक तैर के नदी के बाहर आ गये थे पुनः बचाव कार्य के लिये अपने को अर्पण किया और डूबते हुए जे० सी० ओ० को बचाने में सफल हुए ।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार मुख्तयार सिंह ने अनुकरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया ।

2. मेजर कुलदीप सिंह मलिक (आई० सी०—12249)
डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 अप्रैल, 1968)

20/21 अप्रैल 1968 की रात को मेजर कुलदीप सिंह मलिक एक टुकड़ी के प्लाटून कमांडर थे । इस टुकड़ी को मीजो पहाड़ी के घने जंगलों में उपद्रवियों के छुपने के स्थान पर आक्रमण करने तथा उसे नष्ट करने का आदेश मिला । वहां तक पहुंच सकना कठिन था । लगभग 9 घंटे तक कठिन भू-भाग में मार्च करते हुए प्लाटून छुपाव स्थान के 125 गज के करीब पहुंचा, तभी उपद्रवियों ने मशीनगन से गोलीबारी प्रारम्भ कर दी । घने पेड़ पौधों तथा खड़े ढलानों के कारण प्लाटून का फैलना कठिन था जिसके कारण तीन व्यक्ति हताहत हुए । उपद्रवी की स्वचालित तथा छोटे हथियारों से प्लाटून पर भारी गोलीबारी के बावजूद मेजर कुलदीप सिंह मलिक पैंतरा बदलकर अग्रिम सेक्सन को कैम्प के पास ले गए तथा हथगोले फेंक कर उपद्रवियों की हल्की मशीनगन को शान्त कर दिया । तदुपरान्त उन्होंने अपने जवानों का उपद्रवियों के कैम्प पर हमला करने में नेतृत्व किया और जीतने में सफल हुये ।

मेजर कुलदीप सिंह मलिक ने इस कार्यवाही में अनुकरणीय साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

3. कैप्टन सोमित्र रे (ई० सी०—55979)
राजपूत

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 जून, 1968)

6/7 जून, 1968 की रात को सूचना मिली कि मीजो पहाड़ी क्षेत्र में कुछ सशस्त्र उपद्रवी कैम्प लगाये हुये थे । कैप्टन सोमित्र रे एक प्लाटून के साथ छुपाव स्थान की खोज करने तथा उसे नष्ट करने के लिये चल पड़े । प्लाटून को घने तथा अन्धेरे जंगल से होकर जाना था । घोर अन्धकार था तथा तेज वर्षा हो रही थी । अर्धरात्रि के बाद प्लाटून ने उपद्रवियों के संदिग्ध छुपाव-स्थल की ओर रेंगना प्रारम्भ किया । इस बात का संदेश करके कि शायद उपद्रवियों को इनके प्लाटून की गतिविधियों की सूचना हो गई हो क्यों कि प्लाटून के अग्रसर होते समय अपरिहार्य ध्वनि हो रही थी, कैप्टन सोमित्र रे 5 जवानों तथा एक जे० सी० ओ० के साथ प्लाटून को पीछे छोड़कर आगे बढ़े । छुपाव-स्थल का पता चलते ही उन्होंने अपने छोटे से दल को सब रास्तों पर तैनात किया । एक जवान के साथ उन्होंने छुपाव-स्थान पर धावा बोल दिया और एक संतरी तथा दो और उपद्रवियों को मार दिया । बचे हुए उपद्रवी जब बचने के लिये उन रास्तों की ओर भागे तो वे भी मारे गये । इस मुठभेड़ में 9 उपद्रवी मारे गए, दो रायफलें, कुछ गोला-बारूद तथा महत्वपूर्ण कागजात प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में कैप्टन सोमित्र रे ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

4. चीफ पैटी अफसर दशरथ जाम्बे
(न० 44988) (**मरणोपरान्त**)

5. पैटी अफसर अशीत चन्द्र भादुरी
(न० 45136)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 जून, 1968)

7 जून, 1968 को आई० एन० एस० गुलदार को आई० एन० एस० सुकन्या को निकालने के कार्य पर लगाया गया जो कि कृष्णा

नदी के मुहाने, निजामपत्तम की खाड़ी में फाल्स दिवी के पास भयानक रेतीले तट में धंस गया था । आई० एन० एस० गुलदार भारी तोड़क तथा छिछले पानी के कारण आई० एन० एस० सुकन्या के 500 गज से अधिक निकट न पहुंच सका और धंसे हुए जहाज तक फेंक कर या यान्त्रिक साधनों से भी लाइन न भेजी जा सकी । तब बाय की सहायता से एक नाव द्वारा आई० एन० एस० सुकन्या तक लाइन तैराने का प्रयत्न किया गया किन्तु यह भी व्यर्थ हुआ । जब आई० एन० एस० सुकन्या तक एक लाइन भेजने के सब साधन व्यर्थ सिद्ध हुए तो यह निश्चय किया गया कि तैराक के द्वारा लाइन भेजी जाय । चीफ पैटी अफसर जाम्बे तथा पैटी अफसर भादुरी ने अपने आप को इस कार्य के लिये अर्पित किया । वे नायलोन की लाइन अपने साथ बांधकर तैरकर धंसे हुये जहाज के निकट तक गए जहां पर वे तीव्र धार में फंस गये । चीफ पैटी अफसर जाम्बे तीव्र धार में बह गए और उनका प्राणान्त हो गया । पैटी अफसर भादुरी भी धारा में बह गए थे । एक लम्बे संघर्ष के बाद जो कि लाइलोन लाइन से सम्बन्ध होने के कारण और भी कठिन हो गया था, वे किसी तरह आई० एन० एस० सुकन्या तक पहुंच गए और आई० एन० एस० गुलदार तथा धंसे हुए जहाज के मध्य रस्सी के साथ सम्पर्क स्थापित करने में सफल हो गये ।

इस कार्यवाही में चीफ पैटी अफसर दशरथ जाम्बे और पैटी अफसर अशीत चन्द्र भादुरी ने अनुकरणीय साहस तथा कर्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया ।

6. 1239479 गनर केशव दयाल
आर्टिलरी (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 जून, 1968)

गनर केशव दयाल 18 जून को, जब वे वार्षिक छुट्टी पर थे, उत्तर प्रदेश रोडवेज की बस पर यात्रा कर रहे थे। बस को 10 से अधिक सशस्त्र डाकुओं ने शाहजहांपुर के पास लूट लिया । डाकुओं ने यात्रियों के मूल्यवान सामान को लूटा तथा स्त्रियों से दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न किया । गनर केशव दयाल ने अपनी रक्षा की चिन्ता किये बिना, निशस्त्र होते हुए भी दृढ़ निश्चय के साथ डटकर सशस्त्र डाकुओं का मुकाबला किया । लेकिन ऐसा करते समय डाकुओं ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी ।

इस कार्यवाही में गनर केशव दयाल ने अनुकरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

सं० 16-प्रेज०/69—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिये "सेना पदक" / "आर्मी मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कर्नल इद्याथुमंगलम नारायणन रामदास (आई० सी०—1583), सिगनल्स

15 नवम्बर, 1967 को आसाम के एक क्षेत्र में एक सेना परिवहन की एक भीषण दुर्घटना हो गई थी जिसमें 16 जवान मारे गये तथा 23 अन्य आहत हो गये । एक पैट्रोल टैंकर को क्षति पहुंची और वह टपकने लगा था । लेफ्टिनेंट कर्नल रामदास ने जो दुर्घटना स्थल पर आ पहुंचे थे शीघ्र ही प्रभावकारी कदम उठाये जिससे हताहतों को शीघ्र निष्कासित किया जा सका तथा किसी चीज को भी आग न लग सकी । पुनः वह 21 मई, 1968 को एक दूसरे दुर्घटना स्थल पर पहुंचे जहां एक सैनिक गाड़ी उलट गई थी तथा जल रही थी । गाड़ी के नीचे एक जवान दब गया था और किसी भी क्षण पैट्रोल की टंकी के फटने का खतरा था। तात्कालिक खतरे का अनुभव करते हुए उन्होंने स्थिति को सम्भाला । उन्होंने वहां उपस्थित सिविलियनों को इकट्ठा किया तथा गाड़ी को लगभग एक फुट ऊंचा उठवाया तथा वह जवान को बाहर खींच लाये और इस प्रकार उस की जान बचाई ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल इद्याथुमंगलम नारायणन रामदास ने धैर्यपूर्ण साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

2. मेजर ईगिल नेल गोखले (आई० सी०—11853)
आर्टिलरी

मेजर ईगिल नेल गोखले 4 अक्तूबर, 1968 को एक ऐसी यूनिट के स्थानापन्न कमान अफसर थे जिसे जलपाईगुड़ी जिले में तिस्ता नदी के पश्चिम में बाढ़ में सहायता पहुंचाने का कार्यभार सौंपा गया था । जलपाईगुड़ी पहुंचने पर दल ने एक स्थान पर रात के लिये कैम्प लगाया जहां प्रातः सहायता कार्य किया जाना था । रात में तिस्ता नदी का बांध टूट गया और जल का स्तर 12 फुट ऊंचा हो गया जिससे जलपाईगुड़ी शहर और उनका कैम्प डूब गया । अपने बचाव की तनिक भी चिन्ता किये बिना उन्होंने अपने जवानों को गाड़ी के ऊपर चढ़ाया और उनकी जाने बचाई । 15 अक्तूबर, 1968 को प्रातः जब पानी का स्तर लगभग 5–6 फुट हो गया तो उन्होंने अपनी कान्वाय को छोड़ दिया और बेस कैम्प की ओर तैर कर आये । अपने जवानों की सहायता से उन्होंने बचाव केन्द्र एक कालेज के अहाते में स्थापित किया और लगभग 300 औरतों तथा बच्चों को बचा लिया । अपराह्न में सूचना मिली कि बहुत से लोग बड़ी रेलवे लाइन के उत्तर में असहाय दशा में हैं, तो मेजर गोखले ने पुनः जवानों का नेतृत्व किया और लगभग 500 स्थानीय लोगों को बचा लिया ।

इस संक्रिया में मेजर ईगिल नेल गोखले ने साहस तथा सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

3. मेजर मनमोहन सिंह (आई० सी०—18582)
बिहार

जनवरी 1967 में मेजर मनमोहन सिंह की कम्पनी को मीजो पहाड़ी के एक गांव में भेजा गया जिस में उपद्रवियों ने लोगों को पीड़ित कर रखा था तथा सुरक्षा सेना पर घात लगाये बैठे थे और बहुत से लोगों को हताहत कर दिया था । 24 जनवरी, 1967 को मेजर मनमोहन सिंह ने एक गश्ती दल का नेतृत्व किया तथा 7 उपद्रवियों को पकड़ लिया । बाद की गश्तों में उन्होंने फिर दो उपद्रवियों को पकड़ा तथा बहुत से हथियारों को कब्जे में लेने के अतिरिक्त चार उपद्रवियों के कैम्पों को नष्ट कर दिया । मई 1967 में उन्होंने एक गश्ती दल का नेतृत्व किया जिसने उपद्रवियों के हैडक्वार्टर का पता लगाया तथा उसे नष्ट कर दिया जिसके फलस्वरूप बहुमूल्य कागजात प्राप्त हुए । उन्होंने अनेक बार गश्ती दलों का नेतृत्व किया तथा उपद्रवियों के महत्वपूर्ण नेताओं को पकड़ा तथा उनके कैम्पों को नष्ट कर दिया । मेजर मनमोहन सिंह द्वारा की गई अनथक

संक्रियाओं के परिणाम-स्वरूप मीज़ो पहाड़ी के इस क्षेत्र से उप-द्रवियों का प्रभाव बिलकुल समाप्त हो गया।

आद्योपान्त मेजर मनमोहन सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

4. मेजर नेनन कोवूर (आई० सी०—5999)
सिगनल्स

अक्तूबर 1968 में भयंकर बाढ़ के कारण सिलगुड़ी से गंटोक तक सेना तथा सिविल दूरभाषा संचार व्यवस्था पूर्णतया अस्त-व्यस्त हो गई थी। इस संचार व्यवस्था को शीघ्रातिशीघ्र पुनः चालू करना अनिवार्य था। मेजर नैनन कोवूर को गंटोक में तथा गंटोक से अन्य महत्वपूर्ण स्थानों को पुनः संचार व्यवस्था चालू करने का कार्य सौंपा गया। उन्होंने लाइनों को चालू करने के काम को संगठित किया तथा स्वयं उसका पर्यवेक्षण कर बड़ी रचनात्मक कुशलता, नेतृत्व-शक्ति तथा अनथक उत्साह का परिचय दिया। उन्होंने क्षति का पता लगाने के लिये तथा लाइन पार्टियों के काम का पर्यवेक्षण करने के लिये दूर-दूर तक आपद-ग्रस्त मार्गों से पैदल सफर किया। अपने स्वास्थय तथा आराम की चिन्ता किये बिना दिन-रात काम कर उन्होंने गंटोक के अन्दर और बाहर निश्चित समय में दूरभाषा संचार व्यवस्था चालू कर दी।

आद्योपान्त मेजर नैनन कोवूर ने व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व तथा सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

5. मेजर प्लाकल नारायनीर शंकर नारायणन
(आई० सी०—6497)
इंजीनियर्स

2 अक्तूबर से 5 अक्तूबर, 1968 की भारी वर्षा तथा बाढ़ के कारण गंटोक से सिलगुड़ी तक के राष्ट्रीय राज-मार्ग तथा उप-मार्ग जब बह गये या अधिक क्षति ग्रस्त हो गये तो यह आवश्यक हो गया कि उनको शीघ्रता से पुनः चालू किया जाये। मेजर नारायणन को उस सड़क को पुनः चालू करने का काम सौंपा गया जिस में 65 भूमि-स्खलन हो गये थे। मेजर नारायणन ने रात में कठिन मार्गों से तेज गति से अपनी रेजिमेंट को चलाया और कार्यस्थल पर पहुंचे और स्वयं सड़क की सफाई के काम का पर्यवेक्षण किया। अनथक रूप से अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किये बिना दिन-रात काम करके कार्य में काफी योग दिया ताकि मार्ग खुल सके। बाद में उनकी रेजिमेंट को एक बेली पुल के निर्माण का कार्य सौंपा गया। उन्होंने अपनी नेतृत्व-शक्ति, व्यावसायिक कुशलता तथा प्रयत्न से निश्चित समय में पुल का निर्माण करा दिया तथा आवागमन के लिये उसे खोल दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने विद्युत गृह को भी सहायता दी तथा मार्गों और पुलों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये अनेक खोज दल भेजे।

आद्योपान्त मेजर प्लाकल नारायनीर शंकर नारायणन ने साहस तथा सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

6. मेजर रमेश मोहन मुरगई (आई० सी०—13745)
आर्मी सप्लाई कोर

मेजर रमेश मोहन मुरगई को हजारों असहाय पर्यटकों जिस में विदेशी तथा सिविलियन थे, दार्जिलिंग से निष्कासन के लिये कान्वाय कमाण्डर नियुक्त किया गया। भारी अभूतपूर्व बाढ़ तथा भूमि-स्खलन के कारण सब संचार-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी। उन्होंने कान्वाय को कम चौड़े, ढालू पुराने अप्रयुक्त सैनिक मार्ग से ले जाकर संकट-ग्रस्त सिविलियनों को बचाया। उन्होंने 9 अक्तूबर, 1968 से 24 अक्तूबर, 1968 तक सिलिगुड़ी से दार्जिलिंग तक लगातार चलकर आवश्यक सामान और दवाएं ले गये।

इस संक्रिया में मेजर रमेश मोहन मुरगई ने साहस और सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

7. मेजर रुद्रपत्ना गुरुरमैया श्रीनिवासा मूर्थी,
(एम० आर० 919) आर्मी मैडिकल कोर

6 से 25 अक्तूबर, 1968 को मेजर रुद्रपत्ना गुरुरमैया श्रीनिवासा मूर्थी को जलपाईगुड़ी में चिकित्सक दल तथा स्वास्थ्य अनुभाग के सारे काम का प्रभारी नियुक्त किया गया था। उन्होंने चिकित्सक दल के कार्यों का तथा सिविल चिकित्सा तथा स्वास्थ्य प्राधिकारियों से कार्य के लिये निकट सम्पर्क बनाए रखा। वे लगातार शहर के उन भागों में, जो बुरी तरह प्रभावित हो गए थे, तथा आस-पास के भागों में जाते रहे तथा स्थिति की जांच कर समस्याओं का हल करने के लिये चिकित्सकों को नियुक्त करते रहे। उनके प्रयासों, योजना और चतुराई के परिणामस्वरूप ही चिकित्सक-दल समय पर सामग्री प्राप्त कर सके और टीका लगाने, इलाज करने और अन्य कार्यों में प्रशंसनीय कार्य कर सके। उन्होंने सम्बन्धित जन-संख्या को जो कि उस समय बिना चिकित्सा सुविधा के थी सुचारू चिकित्सा सेवा प्रदान की।

इस संक्रिया में मेजर रुद्रपत्ना गुरुरमैया श्रीनिवासा मूर्थी ने साहस तथा सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

8. कैप्टन लालचुंगा सैलो (आई० सी०—14499)
आसाम

25 मार्च, 1968 को कैप्टन सैलो को मणिपुर राज्य के एक ऐसे क्षेत्र में एक विशेष गश्ती दल का नेतृत्व करने का कार्य सौंपा गया जहां अनेक उपद्रवी संक्रिया कर रहे थे। खतरे के होते हुए भी उन्होंने उपद्रवियों के दो कैम्पों के बारे में तथा उस क्षेत्र में उपद्रवियों के कार्यों के सम्बन्ध में अन्य जानकारी प्राप्त की जो बाद की संक्रियाओं के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। इस गश्ती दल ने एक और उपद्रवी कैम्प को खोज निकाला जहां से उपद्रवी हमारी सेना के विरुद्ध घात लगाते थे। बाद में उन्होंने कैम्प पर आक्रमण करने के लिये एक सेना के दल का नेतृत्व किया। आक्रमण सफल रहा तथा कैम्प नष्ट कर दिया गया। उपद्रवियों को हताहत कर दिया गया तथा अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद और मूल्यवान कागजात प्राप्त हुए।

आद्योपान्त कैप्टन लालचुंगा सैलो ने साहस तथा सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

9. कैप्टन मलकीत सिंह सन्धू (ई० सी० 58279) इंजीनियर्स

अक्तूबर 1968 में कैप्टन मलकीत सिंह सन्धू एक फील्ड कम्पनी की कमान कर रहे थे जिसे जलपाईगुड़ी में तिस्ता नदी की अभूतपूर्व बाढ़ सहायता कार्यों के लिये भेजा गया था। जलपाईगुड़ी में अपने वरिष्ठ अधिकारी के निर्देश के पश्चात वह अपनी कम्पनी को उपस्करों सहित संक्रिया क्षेत्र के निकट ले गये । 5 अक्तूबर 1968 को प्रातः जब पानी तेजी से सड़क की सतह से ऊंचा बढ़ने लगा तो वह तेज बहते हुए पानी में अपनी गाड़ी से उतरे तथा अपने जवानों को गाड़ी तथा उपस्कर जिस में नावें भी शामिल थीं, अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिये उत्साहित किया। दिन के समय जब पानी काफी उतर गया तब उन्होंने तेज बहते पानी के बीच बचाव कार्य शुरू किया और स्वयं एक नाव की कमान सम्भाली और सैकड़ों बाढ़ पीड़ितों को बचाकर अधिक सुरक्षित स्थान पर ले आये। 5 अक्तूबर 1968 को कम्पनी ने अपने साहस तथा द्रुत बचाव संक्रिया से कम से कम 2000 लोगों का जीवन बचाया ।

इस संक्रिया में कैप्टन मलकीत सिंह सन्धू ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

10. कैप्टन पी० सी० जोशी (एम० एस० 7180) आर्मी मेडिकल कोर

9 अक्तूबर 1967 को जम्मू तथा काश्मीर क्षेत्र में एक गश्ती दल पर पाकिस्तानियों ने भीषण गोलीबारी की। कैप्टन जोशी को, जो बटालियन के स्थानिक चिकित्सा अधिकारी थे, हताहतों की देखभाल के लिये उस स्थान को भेजा गया, जहां उन्हें ले जाना था। उस स्थान पर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि हताहत अभी तक पाकिस्तानी फायर के खुले क्षेत्र में हैं तथा उन्हें हटाने में कुछ समय और लगेगा। भीषण पाकिस्तानी गोलीबारी के बावजूद तथा अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना उन्होंने तत्काल वहां तक जाने का निश्चय किया जहां हताहत पड़े हुए थे और उनकी देखभाल की ।

इस संक्रिया में कैप्टन पी० सी० जोशी ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

11. सैकण्ड लेफ्टिनेंट भारत प्रकाश (एस० एस० 29967) इंजीनियर्स

4/5 अक्तूबर 1968 की रात्रि को जब उत्तरी बंगाल के एक क्षेत्र में बाढ़ आई हुई थी तो सैकण्ड लेफ्टिनेंट भारत प्रकाश को बचाव संक्रिया के लिये वहां भेजा गया। तूफानी मौसम तथा भारी वर्षा की परवाह किये बिना वह बचाव कार्य करते रहे तथा 750 व्यक्तियों को बचाने में सफल हो गए । जब वह बचाव कार्य में लगे थे तो तिस्ता नदी का पानी बड़ी तेजी से बढ़ा तथा सैकण्ड लेफ्टिनेंट भारत प्रकाश सहित पार्टी का सम्बन्ध विच्छेद हो गया और 5 अक्तूबर 1968 को 1815 बजे एक विशेष गश्ती दल ने उनके साथ सम्पर्क स्थापित किया । सैकण्ड लेफ्टिनेंट भारत प्रकाश बचाव कार्य के दौरान घायल हो गये थे परन्तु फिर भी उन्होंने निर्भीक होकर बचाव कार्य को चालू रखा । 8 अक्तूबर 1968 को उनको एक और असहाय दल की सूचना मिली जो आधा किलो-मीटर तिस्ता नदी के नीचे था, वे अपने 6 आदमियों के साथ नाव में उस स्थान तक गये और उस तेज बहाव में से एक बेड़े के सहारे 5 तैरते हुए आदमियों को देखा । चूंकि नाव को बेड़े के समीप नहीं ले जाया जा सकता था इसलिए वे एक सैपर के साथ तैरते हुए उस बेड़े के पास गये और उसको बहाव में से बाहर खींचा। जब वह असहाय लोगों को नाव में चढ़ा रहे थे तो नाव उलट गई परन्तु वे 6 से 8 फुट गहरे पानी में भी लगातार बेड़े को पकड़े रहे। अपने साथियों की सहायता से उन्होंने फिर से नाव को सीधा किया और पांचों असहाय आदमियों को नाव में ले आये।

इस संक्रिया में सैकण्ड लेफ्टिनेंट भारत प्रकाश ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्परओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

12. सैकण्ड लेफ्टिनेंट गुरिन्दर सिंह उप्पल (आई०सी० 17237) गढ़वाल राईफल्स

4/5 अक्तूबर 1968 की रात को उत्तर बंगाल का मैनागुड़ी क्षेत्र तिस्ता नदी की बाढ़ से जलमग्न हो गया और जेरदा नाले का पानी उसके सड़क पुल से केवल एक फुट नीचे रह गया । पुल के नीचे से पानी का बहाव, घासपात, मलवा तथा मरे हुए जानवरों के पिंजरों के कारण अवरुद्ध हो गया और उससे पानी की गति मन्द पड़ गयी । काफी दबाव के कारण पुल तथा उसके ईर्द-गिर्द के इलाके के शीघ्र ही बह जाने का खतरा हो गया था । सैकण्ड लेफ्टिनेंट गुरिन्दर सिंह उप्पल को पुल के ईर्द-गिर्द मलवा साफ करने का आदेश दिया गया । उन्होंने शीघ्र ही अपनी प्लाटून का संगठन किया और बांसों तथा लाइन बेडिंग की सहायता से उन बाधाओं को दूर किया और पुल तथा इसके ईर्द-गिर्द के इलाके को बह जाने या टूट जाने से बचा लिया। ऐसा करने के लिये काफी व्यक्तिगत जोखिम उठा कर मलवे को साफ करने के लिये उनको पुल की पटरी के ऊपर जाना पड़ा । दुबारा 5 अक्तूबर 1968 को उन्होंने मैनागुड़ी कस्बे से 6 किलोमीटर दूर एक गांव में एक असहाय इंजीनियर टुकड़ी से सम्पर्क स्थापित किया। ऐसा जानते हुए भी कि बीच के क्षेत्र में 6 से 8 फुट गहरा तेज बहता पानी है और नाव कई बार नीचे की ओर बह गई है तथा उसके बह जाने का खतरा है, उन्होंने उनके लिये एक रास्ता ढूंढ निकाला । उन्होंने रास्ते में मुख्य धारा में एक पेड़ से चिपटे हुए एक छोटे बच्चे को भी बचाया ।

इस संक्रिया में सैकण्ड लेफ्टिनेंट गुरिन्दर सिंह उप्पल ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

13. जे० सी० 16566 सूबेदार बदन कुमार सिंह, बिहार

सूबेदार बदन कुमार सिंह एक कम्पनी के सीनियर जे० सी० ओ० थे जिसे मिजो पहाड़ियों के क्षेत्र में तैनात किया गया जहां

उपद्रवी जनवरी 1967 से अक्तूबर 1967 तक बहुत सक्रिय थे। चूंकि कम्पनी के अधिकांश गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारी और व्यक्ति अनुभवी नहीं थे इसलिये सूबेदार सिंह अधिकतर गश्ती दल के साथ गए तथा उच्च कोटि के नेतृत्व का प्रदर्शन किया। 14 सितम्बर 1967 को वह एक गश्ती दल के सैकण्ड-इन-कमांड थे जिसका नेतृत्व एक अफसर कर रहा था। जब अफसर घायल हो गया तो सूबेदार सिंह ने अपने छोटे दल के साथ उपद्रवी कैम्प पर धावा बोला और एक उपद्रवी को मार गिराया तथा चार को गिरफ्तार कर लिया। इस क्षेत्र में संक्रिया के दौरान कम्पनी ने बहुत से उपद्रवियों को मारा तथा गिरफ्तार किया।

आद्योपान्त सूबेदार बदन कुमार सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

14. जे० सी० 14702 सूबेदार मुलतान सिंह
इन्टेलीजेंस कोर

सूबेदार मुलतान सिंह को सूचना एकत्रित करने के एक श्रम साध्य विशेष कार्य पर लगाया गया था। कई अवसरों पर उन्होंने उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया और मूल्यवान सूचना इकट्ठी की। उन्होंने दिए गए सभी कामों को पूरे जोश और ताकत के साथ किया और उनमें अपना एड़ी चोटी का जोर लगा दिया। उनका साहस और कर्त्तव्यपरायणता सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप था।

15. जे० सी० 60568 सूबेदार मेजर नगप्पा नायडू
इंजीनियर्स

अक्तूबर 1968 में उत्तरी बंगाल में अपूर्व बाढ़ आ जाने के परिणामस्वरूप उस क्षेत्र में रेल तथा सड़क संचार-व्यवस्था पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गई। सूबेदार मेजर नगप्पा नायडू आर्मी इंजीनियर रेजिमेंट में सेवा कर रहे थे जिसे महत्वपूर्ण सड़क-संचार-व्यवस्था चालू करने का कार्य सौंपा गया था। कार्य 5 अक्तूबर को आरम्भ किया गया तथा 25 अक्तूबर 1968 को पूर्ण किया गया। अति कठिन परिस्थितियों में संयंत्र को काम में लाने के मुख्य कारण के परिणामस्वरूप थोड़े ही समय में उन्होंने सड़क को चालू करने में कामयाबी हासिल की। उन्होंने समय पर कार्यवाही की तथा स्थिति को काबू में किया जिससे एक डोजर जो बुरी हालत में था बचाया जा सका अन्यथा वह नष्ट हो जाता।

इस संक्रिया में सूबेदार मेजर नगप्पा नायडू ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. जे० सी० 20795 सूबेदार राम रिछपाल
पायनियर कोर

सूबेदार राम रिछपाल 79 पायनियरों के साथ 3 अक्तूबर से 10 अक्तूबर 1968 तक एक अभ्यास में भाग लेने के लिये एक स्थान पर कैम्प लगाये हुये थे। 4/5 अक्तूबर 1968 की रात को भारी वर्षा हो रही थी। संतरी की आवाज को सुनकर वह अपने तम्बू से बाहर आए और उन्होंने देखा कि सारा कैम्प क्षेत्र एक भूमि-स्खलन के कारण ढ़ह रहा था। उन्होंने शीघ्र ही अपने अप्रभावित साथियों की मदद से तथा पड़ोसी यूनिटों के आदमियों की मदद से बचाव संक्रिया का संगठन किया और बहुत से व्यक्तियों को, जो भूमि-स्खलन के कारण मलबे में दब गये थे, निकाला। निश्चय तथा साहस के साथ उन्होंने हताहतों को ही नहीं बचाया अपितु मूल्यावान सरकारी सम्पत्ति की भी रक्षा की।

इस संक्रिया में सूबेदार राम रिछपाल ने सेना की सर्वोत्कृट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. 6269040 हवलदार माता दीन भारद्वाज
सिगनल्स

6 जनवरी 1968 को हवलदार माता दीन भारद्वाज एक रोबर दल के प्रभारी थे जो कि जनरल अफसर कमांडिंग के साथ नागालैंड जा रहा था। 12 जून 1968 तक रोबर ग्रुप के साथ काम करते हुए उन्होंने दिन-रात परिश्रम करके संचार व्यवस्था बनाये रखी। उन्होंने विविध प्रकार के कार्य, जैसे अग्रिम क्षेत्रों में सेना को भोजन पहुंचाना, हताहतों को निकालने का काम और कैम्प के स्थानीय प्रशासन का काम विपरीत परिस्थितियों में तथा गोलाबारी के मध्य किया। उन्होंने स्वेच्छा से दुभर कार्यों को स्वीकार किया तथा उन्हें अत्यन्त कर्त्तव्यपरायणता के साथ पूरा किया। वे हताहतों का हौसला बढ़ाते रहे और खुशी से अपने आराम को छोड़कर दूसरों को आराम देने के लिये लगे रहे।

हवलदार माता दीन भारद्वाज ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. 7027589 हवलदार/ड्राइवर मंगरू राम
इलेक्ट्रिकल मैकेनिकल इंजीनियरिंग

9 अक्तूबर 1968 को हवलदार मंगरू राम को एक डिटेचमेंट के साथ जिस में 1 नान-कमीशन्ड अफसर 6 जवान तथा दो मझोली रिकवरी गाड़ियां थी, जलपाईगुड़ी भेजा गया जहां बाढ़ में डूबे हुए पशुओं के पिंजरों को निकालना था। इस कार्य में पशुओं के पिंजरों को मकानों से उठाकर निपटान के लिये दूसरी गाड़ियों में लादना था। चूंकि उन्हें डूबे हुए पांच दिन हो चुके थे, पिंजर विघटित तथा विकृत दशा में थे, उनको लादने के लिये रस्सियों से बांधकर उठाना था ताकि वे फट न जावें और विघटित न हो जाएं। बदबू असहनीय थी। यह जानकर कि पिंजरों को शीघ्र हटाना अति आवश्यक है जिससे कि बीमारी न फैले उन्होंने अपने स्वास्थ्य तथा अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना अपने आपको और अपने व्यक्तियों को पूर्ण तत्परता के साथ इस कार्य पर दिन-रात लगाये रखा। उन्होंने 5 दिन में 959 पिंजरों को हटाया।

इस कार्यवाही में हवलदार / ड्राइवर मंगरू राम ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. 4433984 लांस हवलदार अमरीक सिंह
सिख लाइट इन्फेंट्री

4 फरवरी 1968 को 0500 बजे लांस हवलदार तथा अन्य चार जवान जब जम्मू तथा काश्मीर में एक दर्रे से गुजर रहे

थे तो वे भारी हिमानी के नीचे आ गये तथा बर्फ में दब गए । घोर संघर्ष करके लांस हवलदार अमरीक सिंह बाहर आ गए । अपनी सुरक्षा तथा इस बात की परवाह किए बिना कि एक और हिमानी का खतरा था, वे अनथक प्रयत्न करते रहे तथा वह सब जवानों, उनके हथियारों तथा उपस्करों को निकालने में सफल हो गए ।

इस कार्यवाही में हवलदार अमरीक सिंह ने सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप पहल-शक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का पचिय दिया ।

20. 4043120 राइफलमैन बलवन्त सिंह विष्ट
गढ़वाल राइफल्स

5 अक्तूबर 1968 को राइफलमैन बलवन्त सिंह विष्ट उस गश्ती दल के सदस्य थे जिसे इंजीनियर डिटेचमेंट से सम्पर्क स्थापित करने के लिये नियुक्त किया गया था जो कि उत्तरी बंगाल के एक गांव में तिस्ता नदी की बाढ़ के कारण असहाय स्थिति में था। पूरा क्षेत्र 6 से 8 फुट गहरे पानी में डूबा हुआ था तथा पानी का बहाव बहुत तेज था । मार्ग में जाते हुए उन्होंने एक बच्चे को देखा जो कि संकटपूर्ण दशा में एक पेड़ के साथ चिपटा हुआ था तथा सहायता के लिये चीख रहा था । गश्ती दल के नेता ने नाव को उस बच्चे की ओर से लाने का आदेश दिया। नाव तीन बार तीव्र धारा में बह गई जिससे बच्चे के बचाने के काम में बाधा उत्पन्न हो गई । चौथे प्रयास में राइफलमैन बलवन्त सिंह विष्ट ने अपने आपको भारी जोखिम में डालकर पानी में छलांग लगाई तथा नाव को दृढ़ता से रोक कर वृक्ष के पास ले आये जिससे कि दल बच्चे को बचा सका ।

इस कार्यवाही में राइफलमैन बलवन्त सिंह विष्ट ने साहस और पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

21. 4539272 सिपाही आनन्दा लोंधे
महार (**मरणोपरान्त**)

8/9 अक्तूबर 1967 की रात को जब जम्मू तथा काश्मीर के क्षेत्र में उनके गश्ती दल पर पाकिस्तानी स्थितियों से गोलीबारी होने लगी और उनका एक साथी मारा गया तो सिपाही आनन्दा लोंधे बचाव स्थान से बाहर निकल आये और उन्होंने हल्की मशीनगन से पाकिस्तानी स्थिति पर गोलीबारी शुरू कर दी । वह तब तक गोली चलाते रहे जब तक कि एक मझोली मशीनगन की गोली उनके सिर पर न लगी और उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सिपाही आनन्दा लोंधे ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

सं० 17-प्रेस/69—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिये "नौ सेना पदक" "नैवी मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं —

1. कमांडर नौरमन जोसफ सलदान्हा,
भारतीय नौ सेना

14 मई, 1968 को 0845 बजे जब कि आई० एन० एस० बियास और रणजीत दमन से दूर अभ्यास कर रहे थे तब उन्हें संकट-का संदेश मिला कि एस० एस० "भारत रत्न" मलक्का तट पर गोपनाथ के स्थान पर धंस गया है और टूट रहा है । कमांडर सलदान्हा ने जो कि आई० एन० एस० बियास के कमान अफसर थे, दोनों जहाजों का कार्यभार संभाल कर दुर्घटना-स्थल की ओर प्रस्थान किया । वह लगभग 1500 बजे वहां पहुंचे परन्तु उन्होंने उस समय नाव भेजना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं समझा क्योंकि मौसम झंझावाती था । वहां जहाज पर या दुर्घटना-स्थल के आसपास कोई जीवन दृष्टिगत नहीं होता था । निर्धारित कार्य को पूरा करने के लिये उन्होंने आई० एन० एस० रणजीत को अलग कर दिया और नष्ट जहाज के समीप ही अपने जहाज का लंगर डाल दिया । आधी रात के लगभग सूचना मिली कि एस० एस० "भारत-रत्न" का मास्टर अभी तक जहाज में हैं । खराब मौसम और घोर अंधकार की परवाह किये बिना उन्होंने बचाव दल को संगठित किया जिसमें तीन अफसर तथा पांच नाविक थे । उन्होंने मोटर व्हेलर को नीचे उतार दिया । बचाव दल ने एस० एस० "भारत-रत्न" के मास्टर को बचा लिया ।

इस संक्रिया में कमांडर नौरमन जोसफ सलदान्हा ने जिस नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया वह भारतीय नौ सेना की श्रेष्ठ परम्परा के अनुरूप है ।

2. लेफ्टिनेन्ट कमांडर मधुसूदन कोंडथ,
भारतीय नौ सेना ।

14 मई, 1968 को आई० एन० एस० बियास दमन के पास अभ्यास पर था तब संकट संदेश मिला कि एस० एस० "भारत-रत्न" जो कि मलक्का तट पर गोपनाथ स्थान पर धंस गया है टूट रहा है । अर्धरात्रि को सूचना मिली कि एस० एस० "भारत-रत्न का मास्टर अभी तक जहाज पर है । आई०एन०एस० बियास के कमान अफसर ने स्वयं-सेवकों के दल को गठित किया ताकि दुर्घटनाग्रस्त जहाज तक जाया जा सके और मास्टर को बचाया जा सके । लेफ्टिनेन्ट कमांडर कोंडथ ने स्वयं को अर्पित किया तथा एक कोक्सवेन मोटर व्हेलर का कार्यभार सम्हाला जिसे कि कठिन स्थितियों में उतारा गया था । विपरीत मौसम के बावजूद दो अफसरों तथा पांच नौ सैनिकों के साथ 45 मिनट में वे दुर्घटनाग्रस्त जहाज तक पहुंचे । बचाव कार्य के बाद मोटर ह्वेलर को जहाज तक पहुंचने में 2 घंटे लगे क्योंकि विपरीत वायु तथा ज्वार भाटा था । यद्यपि नाव के बह जाने का लगातार खतरा बना था फिर भी कर्मीदल लैफ्टिनेन्ट कमांडर कोंडथ के योग्य नेतृत्व में व्हेलर को आई० एन० एस० बियास के निकट ले जा सके और जहाज पर चढ़ा सके ।

इस संक्रिया में लेफ्टिनेण्ट कमांडर मधुसूदन कोंडथ ने जिस साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया वह भारतीय नौसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप हैं ।

3. लेफ्टिनेन्ट जसविन्दर सिंह बरार,
भारतीय नौ सेना

14 मई, 1968 को जब कि आई० एन० एस० बियास दमन के पास अभ्यास कर रहा था तब एक संकट संदेश मिला कि एस० एस० "भारत-रत्न", जो कि मलक्का तट पर गोपनाथ के स्थान पर धंस गया है और टूट रहा है । यह सूचना मिलने पर कि एस० एस० "भारत रत्न" का मास्टर अभी तक जहाज में हैं, कमान अफसर ने स्वयं-सेवक कर्मीदल को दुर्घटनाग्रस्त जहाज तक जाने और मास्टर

को बचाने के लिये बुलाया । वरीय अभियन्ता लेफ्टिनैन्ट जसविन्दर सिंह बरार ने इस कार्य के लिये स्वयं को अर्पण किया तथा बचाव दल के साथ गये । जब दुर्घटनाग्रस्त जहाज के मास्टर को अत्यत कठिन परिस्थितियों में बचाया जा रहा था तो उन्होंने स्वयं लाइफ लाइन को जो मास्टर के चारों ओर थी सम्हाला और जब उनको आई० एन० एस० बियास पर लाया जा रहा था तब भी सहायता दी ।

इस संक्रिया में लैफ्टिनेन्ट जसविन्दर सिंह बरार ने जिस साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया वह भारतीय नौ सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप हैं ।

4. रोशन लाल,
चीफ इन्जीनियरिंग मैकेनिक,
(नम्बर 60660)

18 सितम्बर, 1967 को महत्वपूर्ण अभ्यास पर जाने से पहले एक बड़े लड़ाकू जहाज की मशीनरी तथा फनल-अप-टेक में गम्भीर क्षति हुई । ऐसी स्थिति में अधिकतम गर्मी तथा विषाक्त गैस निकलने के कारण दूषित वायु में आपाती मरम्मत करना आवश्यक हो गया था । चीफ इन्जीनियरिंग मैकेनिक रोशन लाल ने नौ सैनिकों के एक दल के साथ दिन-रात लगातार काम करके 48 घंटे में कार्य को सराहनीय ढंग से पूरा किया जिससे कि जहाज अपने कार्यक्रम के अनुसार अभ्यास में भाग ले सका ।

इस संक्रिया में चीफ इन्जीनियरिंग मैकेनिक रोशन लाल ने जिस साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया वह नौ सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप है ।

5. गुज्जर मल डोगरा,
पैटी अफसर इन्जीनियरिंग मैकेनिक,
(नम्बर 64903)

26 जुलाई, 1968 को जब पैटी अफसर गुज्जर मल डोगरा आई० एन० एस० कावेरी के नं० 2 बायलर कक्ष में ड्यूटी पैटी अफसर मैकेनिक (इन्जीनियरिंग) का कार्यभार सम्हाल रहे थे तो उन्होंने देखा कि बिल्जज में बाढ़ आ रही है और पानी का स्तर स्प्रेयरस् के निकट खतरे की स्थिति में है । उन्होंने शीघ्रता से पंपिंग क्रिया प्रारम्भ कर दी जिसे जनरल सर्विस पम्पों की मरम्मत के लिये रोक दिया गया था । उनके पहुंचने के 5 मिनट के अन्दर ही बिल्ज जल के ऊपर तेल की पतली फिल्म में आग लग गई । उन्होंने दूसरे व्यक्तियों को बायलर कक्ष छोड़ने का आदेश दिया । उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से काम करते हुए आग को बुझा दिया जिससे भारी दुर्घटना होने से बच गई ।

इस कार्यवाही में पैटी अफसर गुज्जर मल डोगरा ने जिस अनुकरणीय साहस, पहल-शक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया वह भारतीय नौ सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप है ।

6. ओंकार चन्द, मैकेनिशियन (IV)
(नम्बर 46458)

14 मई, 1968 को जब आई० एन० एस० बियास दमन के पास अभ्यास कर रहा था तब एक संकट संदेश मिला कि एस० एस० "भारत-रत्न" जो कि मलक्का के तट पर गोपनाथ के स्थान पर धंस गया है और टूट रहा है । उस स्थल पर पहुंच कर कमान अफसर को पता चला कि दुर्घटनाग्रस्त जहाज का मास्टर अभी तक जहाज में हैं । मैकेनिशियन ओंकार चन्द ने स्वयं को बचाव दल में कार्य करने के लिये अर्पित किया और मोटर ह्वेलर के इन्जन को चालू रखने में सहायता दी । बचाव कार्य के दौरान जो तीन घंटे तक चला उन्होंने स्वयं इंजन की देखरेख की और बहुधा नंगे हाथों से गर्म सिलैंडर काउलिंग को ढके रखा जिससे कि पानी इंजन में न भर जावे । इसके परिणाम स्वरूप उनके हाथों में छाले पड़ गये । इस संक्रिया में मैकेनिशियन ओंकार चन्द ने साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया है ।

7. विजेन्द्र कुमार कश्यप,
सीमैन, श्रेणी 1 (नम्बर 88332)

14 मई, 1968 को जब आई० एन० एस० बियास दमन के के पास अभ्यास कर रहा था तब एक संकट संदेश मिला कि एस० एस० "भारत-रत्न" जो कि मलक्का तट पर गोपनाथ के स्थान पर धंस गया है और टूट रहा है । स्थल पर पहुंच कर कमांडिंग अफसर ने एक बचाव दल भेजा जिसमें विजेन्द्र कुमार कश्यप मोटर ह्वेलर में एक सदस्य थे जिसे दुर्घटनाग्रस्त जहाज के मास्टर को बचाने के लिये भेजा गया था जिनकी अभी भी दुर्घटनाग्रस्त जहाज में होने की सूचना मिली थी । उनका इस बचाव कार्य में गरजते हुए समुद्र और तेज वायु मे अपनी तनिक भी परवाह किये बिना मास्टर को जहाज से उतारना तथा ह्वेलर से नीचे झुक कर कार्य करना बहुत प्रशंसनीय था ।

सं० 18-प्रेज/69—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिये "वायु सेना पदक" । "एयर फोर्स मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. एयर कमोडोर महेश्वर दास खन्ना
(2776) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

एयर कमोडोर महेश्वर दास खन्ना को 1943 में वायु सेना में कमीशन दिया गया था । अधिकांश सेवा काल में वह लड़ाकू पायलट की ड्यूटीज पर रहे । उन्होंने वायुसेना में दुर्घटना रहित लगभग 3500 घंटे की लड़ाकू उड़ानें कीं । उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध की संक्रियाओं में बर्मा में, 1947-48 में जम्मू तथा काश्मीर में 1961 में गोआ में और 1965 में भारत-पाक संघर्ष में भाग लिया । उन्होंने वायु संक्रियाओं से संबन्धित महत्वपूर्ण उड़ानें कीं एवं महत्व-पूर्ण पदों पर कार्य किया । एक विंग की कमान सम्हालने के बाद इन्होंने अपने विंग के अंतरगत युनिट की संक्रियात्मक तथा उड़ान योग्यताओं में थोड़े ही समय में बहुत वृद्धि की । अपने पद के कार्यों के अलावा उन्होंने 60 अतिरिक्त पायलटों को मिस्टीयर तथा नेट विमानों पर पूरा संक्रियात्मक प्रशिक्षण दिया ।

आद्योपान्त एयर कमोडोर महेश्वर दास खन्ना ने व्यावसायिक कुशलता तथा संगठन योग्यता का प्रदर्शन किया ।

2. ग्रुप कैप्टन हेमंत रामकृष्ण चिटनिस
(2964) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

ग्रुप कैप्टन हेमंत रामकृष्ण चिटनिस उन गिने चुने प्रशिक्षकों में से थे जिन्होंने ब्रिटेन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और उड़ान प्रशिक्षकों के स्कूल में प्रशिक्षक के पद पर नियुक्त थे । उन्होंने 3500 घंटे की दुर्घटना रहित उड़ाने की हैं जिनमें से आधी उड़ाने प्रशिक्षण के लिए थीं । स्क्वाड्रन कमांडर के रूप में उन्होंने अपनी स्क्वाड्रन को न केवल

हंटर वायुयानों में परिवर्तित किया बल्कि थोड़े ही समय में उसे अच्छी संक्रियात्मक योग्यता के स्तर पर ले आये। बाद में पूर्वी क्षेत्र में उन्होंने अपनी प्रशंसनीय सूझ-बूझ, संगठन योग्यता तथा परिश्रम से लड़ाकू बम-वर्षक विंग की सफलतापूर्वक स्थापना की।

आद्योपान्त ग्रुप कैप्टन हेमंत रामकृष्ण चिटनिस ने लगातार पहल-शक्ति, संगठन योग्यता, तथा भारतीय वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

3. ग्रुप कैप्टन जगदीश बिहारी लाल
(3646) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

ग्रुप कैप्टन (तब विंग कमांडर) जगदीश बिहारी लाल ने एक परिवहन तथा एम/आर स्क्वाड्रन की लगभग 3 साल तक कमान की और इस अवधि में उच्च परिवहन क्षमता तथा इन्सट्रूमेन्ट रेटिंग बनाये रखी। एक स्क्वाड्रन कमांडर के अनेक कर्त्तव्यों के बावजूद उन्होंने सुपर-कौन्सटेलेशन वायुयान पर 800 घंटे से अधिक उड़ानें कीं। उनके कार्यकाल में सुपर-कौन्सटेलेशन विमान में सुधार करके उसे एम/आर रोल के लिए उपयुक्त बनाया गया तथा इनके निदेश पर बहुत से परिक्षण किये गये और शीघ्रता से इसे नये संक्रियात्मक कार्य के योग्य बनाया गया। उन्होंने स्क्वाड्रन को सौंपे गये प्रत्येक एम/आर तथा ए० एस० एस० आर० के कार्य को पूरा किया। जिस ढंग से विंग कमांडर लाल के नेतृत्व में स्क्वाड्रन द्वारा अनेक कार्य पूरे किये गये, उससे सबने उनके कार्य की प्रशंसा की।

आद्योपान्त ग्रुप कैप्टन जगदीश बिहारी लाल ने व्यावसायिक कुशलता, सूझ-बूझ तथा नेतृत्व-शक्ति का प्रदर्शन किया।

4. ग्रुप कैप्टन सरोज जेना
(3157) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

ग्रुप कैप्टन सरोज जेना ने अप्रैल-अक्तूबर 1962 में कांगों में भारतीय वायुसेना के कैनबरा टुकड़ी की कमान की उनके स्क्वाड्रन ने महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने स्वयं 10 उड़ानें खोज के लिए कीं। दिसम्बर 1962 से मई 1965 तक उन्होंने दूसरी स्क्वाड्रन की कमान की। उनके नेतृत्व में इस स्क्वाड्रन ने सौंपे गये सब काम भली भांति पूरे किये। जनवरी 1967 में ग्रुप कैप्टन जेना ने वायु-सेना स्टेशन पालम की कमान सम्हाली तथा उन्होंने 1967 और 1968 के गणतंत्र दिवस के सलामी उड़ान का संगठन किया। वे तिलपत में 31 मार्च 1968 को हुए वायु-शक्ति प्रदर्शन में उलझन-पूर्ण उड़ानों की योजना बनाने, वायुयानों की सुरक्षा तथा उनके ठीक-ठीक समय के लिये उत्तरदायी थे।

आद्योपान्त ग्रुप कैप्टन सरोज जेना ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया जो भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुकूल है।

5. विंग कमांडर करण यादव
(4200) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

विंग कमांडर करण यादव लगभग चार साल से वायुसेना की एक ऐसी यूनिट में काम कर रहे हैं जिस का काम यह है कि जांच और सघन परीक्षण द्वारा उड्डयन की सारी समस्याओं पर विचार करना और नये वायुयानों की देखरेख करना तथा हथियारों को हिफाजत से ले जाने, उनसे सही और प्रभावकारी मार करने के लिए परीक्षण करना। उन्होंने लगभग 500 घंटे की उड़ानें इस कठिन कार्य के लिये कीं। स्वदेश निर्मित हिन्दुस्तान फाइटर तथा किरन वायुयानों की उड़ानों में न केवल उन्होंने उनके संक्रियात्मक कार्य के सुधार में योगदान दिया बल्कि दोषों के बढ़ने से पूर्व प्रारम्भ में ही ठीक कर दिया। उन्होंने देश में वैमानिक उद्योग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योग दिया है तथा काम में लाये जा रहे बहुत से अन्य वायुयानों की समस्याओं को सुलझाया।

आद्योपान्त विंग कमांडर करण यादव ने पहल-शक्ति, व्याव-सायिक कुशलता तथा भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

6. विंग कमांडर निर्मल चन्द्र सूरी
(4236) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

विंग कमांडर निर्मल चन्द्र सूरी अगस्त 1966 से एक लड़ाकू स्क्वाड्रन की कमान कर रहे हैं। उनकी स्क्वाड्रन में एक प्रकार के वायुयानों की प्रहार शक्ति को बढ़ाने के लिये यह जरूरी था कि उसमें रखे शस्त्रों को छोड़ने की संक्रिया में सुधार किया जाये। यह बड़ा सुधार था तथा जिसको विंग कमांडर सूरी ने स्वयं अपनी देख रेख में किया। इस सुधार से भारतीय वायु सेना की केवल फायर क्षमता ही नहीं बढ़ी बल्कि विदेशी मुद्रा की भी काफी बचत हुई। विंग कमांडर सूरी ने 3500 घंटे की उड़ानें कीं जिसमें 175 घंटे की रात्रि में एक इन्जन वाले वायुयान द्वारा की गई उड़ानें भी सम्मि-लित हैं। जब उनका तबादला वायुकार्मिक परीक्षा बोर्ड में साढ़े तीन साल के लिए हुआ तो उन्होंने जैट सहित छः प्रकार के वायुयानों के परीक्षक के रूप में कार्य किया। इस अवधि में उन्होंने 600 घंटे से अधिक की उड़ानें पायलटों के इन्सट्रूमेन्ट रेटिंग के लिए तथा उड़ाकू प्रशिक्षकों के वर्गीकरण के लिए की।

आद्योपान्त विंग कमांडर निर्मल चन्द्र सूरी ने भारतीय वायु-सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप व्यवसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

7. विंग कमांडर रणजीत कुमार कूकर
(4103) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

वायुसेना की एक युनिट के कमान अफसर की हैसियत से विंग कमांडर रणजीत कुमार कूकर ने बड़ी पहल-शक्ति, संगठन की योग्यता तथा सूझ-बूझ का प्रदर्शन अपने स्क्वाड्रन की कार्यक्षमता को बनाये रखने में किया है। उन्होंने स्क्वाड्रन के 100 पायलटों का प्रशिक्षण का कार्यभार संभाले रखा है तथा प्रति सप्ताह तीन वाहक सेवाओं को चालू रखा। यह उन्होंने तब पूरा किया है जब कि स्क्वा-ड्रन के पास सीमित साधन थे, और कोई स्थापित स्टेशन प्रशासकीय सहायता के लिए नहीं था। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी उनके योग्य नेतृत्व में स्क्वाड्रन के संक्रियामक स्तर में सुधार हुआ है। बड़ी संख्या में पायलटों तथा नेवीगेटरों ने दिन और रात की संक्रियाओं में पैराट्रूपिंग रहित प्रशिक्षण पाया। इससे स्क्वाड्रन ने काफी संख्या में वर्गीकृत पायलटों तथा नेवीगेटरों को दूसरे स्क्वाड्रनों को उपलब्ध कराया।

आद्योपान्त विंग कमांडर रणजीत सिंह कूकर ने पहल-शक्ति संगठन योग्यता तथा सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया है।

8. विंग कमांडर सत्य पाल वर्मा
(एम० आर०-690) मेडीकल (ए एम-पी)

विंग कमांडर सत्य पाल वर्मा वायुसेना उड्डयन चिकित्सा स्कूल के ह्यूमन इन्जीनियरिंग विंग के कार्यभारी अधिकारी के रूप में जून 1964 से काम कर रहे हैं। इस यूनिट में आने से पहले उन्होंने जेट वायुयान में पायलट के रूप में इस विचार से योग्यता प्राप्त की कि वे चिकित्सा अधिकारी के रूप में वायुसेना में अधिक प्रभावकारी ढंग से कार्य कर सकें। उन्होंने ह्यूमन इन्जीनियरिंग समस्याओं पर सलाहकार के रूप में एच एफ-24 और एच जे टी-16 वायुयान के डिजाइन और विकास के बारे में हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड, बंगलौर को इन वायुयानों की उड़ान में सुविधा तथा सुरक्षा बढ़ाने में काफी योगदान दिया है। ह्यूमन इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें कामनवैल्थ एडवायजरी एरोनाटिक्स रिसर्च काऊंसिल का भारत में ह्यूमन इंजीनियरिंग समन्वयक नियुक्त किया गया। डाक्टर तथा पायलट होने के साथ विंग कमांडर वर्मा सुयोग्य एलक्ट्रोनिक इन्जीनियर भी हैं। उन्होंने प्रोटोटाइप वायोटेलमेट्रिक उपकरण बनाया जो उड़ान के दौरान पायलटों के शारीरिक अनुश्रवण के लिये प्रयोग किया जाता है जिसकी सशस्त्र सेना चिकित्सा अनुसंधान समिति ने भी प्रशंसा की है।

आद्योपान्त विंग कमांडर सत्यपाल वर्मा ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. विंग कमांडर सूरज प्रकाश दत्त
(3649) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

विंग कमांडर सूरज प्रकाश दत्त एक लड़ाकू स्क्वाड्रन के कमान अफसर थे। वह अपने स्क्वाड्रन को दिसम्बर 1967 से मई 1968 के बीच 1906 घंटे भारी कठिनाइयों तथा वायुयानों की कम सेवा-शक्यता होने पर भी उड़ानों के लिए स्वयं उत्तरदायी थे। भारी कठिनाइयों तथा प्रशिक्षित सैनिकों तथा उपकरणों की कमी के होते हुए भी उन्होंने दृढ़ निश्चय, नेतृत्व शक्ति से अपने स्क्वाड्रन को संक्रियात्मक रूप से तैयार किया और वायुयान के संक्रियात्मक प्रशिक्षण के भारी काम में वायु कर्मीदल को उच्चस्तरीय योग्यता प्रदान की।

आद्योपान्त विंग कमांडर सूरज प्रकाश दत्त ने साहस, पहल-शक्ति तथा कर्तव्यपरायणता का भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप प्रदर्शन किया।

10. स्क्वाड्रन लीडर अजीत कुमार चौधरी
(5063) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्कक्वाड्रन लीडर अजीत कुमार चौधरी नवम्बर 1965 से लड़ाकू प्रशिक्षण विंग में कार्य कर रहे हैं। लड़ाकू प्रशिक्षक के रूप में वे 2000 घंटे उड़ान कर चुके हैं। 16 मई 1968 को उन्हें अधिकार दिया गया कि वे वैम्पायर वायुयान पर एक शिक्षार्थी के साथ सामान्य और करतबपूर्ण उड़ान करें। उड़ान के अन्त में जब रोलर उठा तब उन्हें भारी ध्वनि सुनाई दी और देखा कि आर० पी० एम० नीचे घूम रहा था तथा इन्जन की शक्ति पूरी समाप्त हो रही थी। वायुयान 300 फुट ही ऊपर उठा था और 170 नाट्स पर उड़ रहा था। स्क्वाड्रन लीडर चौधरी ने उसे ऊंचाई पर ले जाने की शीघ्र कार्यवाही की। असाधारण कुशलता तथा धैर्यता से वे वायुयान को सुरक्षित उतार सके।

11. स्कवाड्रन लीडर जोगिन्दर पाल सिंह
(4911) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर जोगिन्दर पाल सिंह परिवहन प्रशिक्षण विंग के विशिष्ट अफसरों में से हैं जिन्होंने कुल 5800 घंटे की दुर्घटना-रहित उड़ानों में से 1670 घंटे प्रशिक्षणात्मक उड़ानें तथा 1308 घंटे संक्रियात्मक उड़ानें की हैं। उनका प्रशिक्षणात्मक उड़ानों के स्तर के सुधार में प्रशंसनीय योगदान है।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर जोगिन्दर पाल सिंह ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया है।

12. स्क्वाड्रन लीडर नारायण अय्यर वेंकटरमानी
(5369) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर नारायण अय्यर वेंकटरमानी ने 11 साल के सेवा काल में 5900 घंटे की उड़ानें की हैं जिसमें 2400 घंटे प्रशिक्षणात्मक हैं जो चार भिन्न प्रकार के वायुयानों से की गई। उन्होंने 900 घंटे की संक्रियात्मक उड़ाने नेफा, नागालैण्ड तथा मिज़ो पहाड़ियों में कीं। वह बड़ी संख्या में शिक्षार्थी पायलटों को पूर्ण संक्रियात्मक प्रशिक्षण पायलट बनाने के लिए उत्तरदायी थे ताकि वे कठिन परिस्थितियों में कार्य कर सकें। एयर क्रयू परीक्षा बोर्ड में एयर फोर्स परीक्षक बनने पर वे वायुसेना में वर्गीकरण/इन्सट्रूमेन्ट रेटिंग के कार्य में बहुत उन्नति होने के उत्तरदायी हैं।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर नारायण अय्यर वेंकटरमानी ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

13. स्क्वाड्रन लीडर पदमनाभ अशोक
(4653) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर पदमनाभ अशोक वायुयान उड्डयन परीक्षण युनिट में सक्रिय कार्य करते रहे हैं। वह अधिकांश में एच० एफ०-24 वायुयान के उड़ान-विस्तार के लिए मुख्यतः उत्तरदायी हैं। उन्होंने इस वायुयान में रोल की बेहतर रेट के लिए संशोधन की सिफारिश भी की थी। उनके ही प्रयास से अकेले इन्जन का कार्य, भूमि आक्रमण के कार्य में तुरन्त कार्यवाही, दबी हुई सीमाओं, करतब तथा पैंतरा-बाजी तकनीकी जानकारी आदि जल्दी एच० एफ०-24 के बारे में इकट्ठी की जा सकीं। इससे इस वायुयान को संक्रियात्मक कार्य के लिए शीघ्र बनाने में सहायता मिली।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर पदमनाभ अशोक ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्परा के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

14. स्क्वाड्रन लीडर कैसर अली
(4651) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर कैसर अली ने अपने 14 साल के सेवा काल में 3550 घंटे की उड़ाने की जिसमें 1600 घंटे प्रशिक्षक की हैसियत से जैट लड़ाकू तथा बम-वर्षक वायुयान पर उड़ाने शामिल हैं।

उन्होंने चार साल तक बाम्बर कनवर्ज़न यूनिट में फ्लाइट कमांडर के पद पर कार्य किया और वे भारी संख्या में बाम्बर पायलटों को प्रशिक्षण देने के लिए उत्तरदायी थे जिन्होंने 1965 में भारत-पाक संघर्ष में उच्चस्तर की व्यावसायिक कुशलता का प्रदर्शन किया। उन्होंने दो साल तक संयुक्त अरब गणराज्य में विशिष्टता के साथ प्रशिक्षक का कार्य किया। अगस्त 1966 में उनका स्थानांतरण वायु कर्मीदल परीक्षक बोर्ड में हो गया जहां बाद में उन्होंने इन्स्ट्रुमेंट रेटिंग और प्रशिक्षकों का पुनवर्गीकरण परीक्षण का कार्य बड़ी लग्न से किया। वह बाम्बर वायुयान में संक्रियात्मक उड़ान की प्रक्रिया के मानकीकरण के लिए भी उत्तरदायी थे।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर कैसर अली ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरुप व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

15. स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र सौंधी
(4659) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

नवम्बर, 1965 से स्क्वाड्रन लीडर सौंधी एक स्क्वाड्रन में हैं जहां वे प्रशिक्षण अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। इस अवधि में इस स्क्वाड्रन की संक्रियात्मक क्षमता कम थी क्योंकि अधिकांश अनुभवी चालकों का अन्यत्र स्थानांतरण हो गया था। इसके बावजूद उन्होंने अपना ही संपरिवर्तन कम से कम समय में पूरा नहीं किया बल्कि निरन्तर परिश्रम करके स्क्वाड्रन को उच्चस्तर की संक्रियात्मक क्षमता का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने 7515 घंटे की उड़ानें की हैं।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर रमेश चन्द्र सौंधी ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरुप उच्चस्तर की व्यावसायिक कुशलता तथा धैर्य एवं अटल कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

16. स्क्वाड्रन लीडर राम कुमार सिन्हा
(4974) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर राम कुमार सिन्हा ने जम्मू और काश्मीर, लदाख और नेफा में तीन कार्यकाल बिताये। परिवहन पायलट होने के नाते उन्होंने 1,000 घंटे की उड़ानें फिक्सड विंग परिवहन वायुयान में की। 1962 में चीनी आक्रमण तथा 1965 के भारत-पाक संघर्ष में उन्होंने 700 हताहतों को अग्रिम क्षेत्रों से निकाला। इस कार्य के लिए उन्हें 2000 बार बिना तैयार की गई कठिन भूमि पर अवतरण करना पड़ा। उन्होंने नये हवाई पट्टियों पर पहली बार जांच के लिए उड़ानें की। उन्हें कई बार नागरिक प्राधिकारियों की सहायता के लिए बुलाया गया है। रामेश्वरम तथा धनुषकोडि में तूफान के समय असहाय जनता को औषधियां, अन्न तथा जल देने के लिए उन्होंने बहुत सी उड़ानें कीं। दूसरे अवसर पर अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना वे पी० एण्ड० टी० विभाग के एक गम्भीर रूप से बीमार मैकेनिक को हेलीकाप्टर से ले गये और इस प्रकार उसकी जान बचाई।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर राम कुमार सिन्हा ने भारतीय वायु सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

17. स्क्वाड्रन लीडर राजेन्द्र देव पन्त
(4737) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर राजेन्द्र देव पन्त एक हेलीकाप्टर यूनिट के कमान अफसर हैं। उन्होंने 1079 घंटे की हेलीकाप्टर संक्रियात्मक उड़ानें की हैं जिसमें 450 घंटे की वर्तमान कार्य की उड़ानें जो पूर्वी क्षेत्र, नेफा, नागालैण्ड और मीज़ो पहाड़ी क्षेत्र में की गई शामिल हैं। उन्होंने 150 से अधिक हताहतों को निकाला। 19 जुलाई 1968 को जब संदेश मिला कि एक गम्भीर आहत को ऊंचाई पर स्थित एक दुर्गम हवाई पट्टी से शीघ्र निकालना है तो स्क्वाड्रन लीडर पन्त ने विपरीत मौसमी परिस्थितियों तथा दुर्गम विभाग के होते हुए भी स्वयं को इस कार्य के लिये अर्पण किया। उनके हेली पैड पर उतरते ही मौसम और भी खराब हो गया किन्तु स्क्वाड्रन लीडर पन्त ने अपने व्यावसायिक ज्ञान तथा साहस से कुशलतापूर्वक बादलों के बीच रिक्त स्थान से होकर उड़ान भरी और गम्भीर आहत को अस्पताल ले गये तथा इस प्रकार उसकी जान बचा सके।

सम्पूर्ण कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर राजेन्द्र देव पन्त ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरोध साहस, व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

18. स्क्वाड्रन लीडर सतीश चन्द्र मोहन
(5041) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर सतीश चन्द्र मोहन का संक्रियात्मक तथा प्रशिक्षणात्मक दोनों प्रकार की उड़ानों में अच्छा रिकार्ड है। उन्होंने कुल 5570 घंटे की उड़ानें की हैं जिसमें 2720 घंटे की सांक्रियात्मक क्षेत्र में तथा 1265 घंटे की प्रशिक्षणात्मक उड़ानें हैं। उन्होंने सदा विपरीत परिस्थितियों तथा दुर्गम भाग में कठिन कार्यों के लिए स्वयं को अर्पण किया। उन्होंने अपनी स्क्वाड्रन की विविध रूपों में लगातार उच्चतर की संक्रियात्मक तैयारी बनाए रखी। उन्होंने हर वर्ग के चालकों को दिन और रात प्रशिक्षण दिया।

स्क्वाड्रन लीडर सतीश ने चन्द्र मोहन ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरोध साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

19. स्क्वाड्रन लीडर सदानन्द कुलकर्णी
(5292) जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर सदानन्द कुलकर्णी ने 11 साल के नेवीगेटर सेवा काल में 3150 घंटे की उड़ाने की हैं जिसमें से 1320 घंटे की प्रशिक्षणात्मक उड़ानें हैं। उनका परिवहन वर्ग "ए" है तथा क्यू० एन० आई० वर्ग ए०-1 है। उन्होंने अपनी चार साल की प्रशिक्षक अवधि में प्रशिक्षणात्मक कुशलता तथा उड़ान के उच्च स्तर का प्रदर्शन किया है। उन्होंने अपने तीन लगातार कोर्स के प्रशिक्षणार्थियों को एयर वर्क्स में सर्वोत्तम नेवीगेटर बनाकर सफलता दिलाई। एम० आर० स्क्वाड्रन में नेवीगेटर के रूप में उन्होंने 1125 घंटे की लिबेटर वायुयान में उड़ानें की और भारी संख्या में यू०/टी० नेवीगेटरों को कुशल तथा पूर्ण संक्रियात्मक मेरीटाइम नेवीगेटरों राडार संचालकों तथा बमबारों को प्रशिक्षण दिया।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर सदानन्द कुलकर्णी ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरुप व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

20. स्क्वाड्रन लीडर स्वतंत्र कुमार गोयल (4684) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर स्वतंत्र कुमार गोयल को वायुसेना मुख्यालय में दिसम्बर 1963 में कम्यूनीकेशन स्क्वाड्रन में उच्च अधिकारियों को डकोटा वायुयान से ले जाने के कार्य पर लगाया गया। एच० एस० 748 वायुयान के यूनिट में आने पर वह महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ले जाने वाले चालकों में योग्यता प्राप्त करने वाले प्रथम थे। बाद में उन्होंने टी० यू० 124 वायुयान उड़ाने की योजनायोग्यता भी प्राप्त कर ली। उन्होंने स्क्वाड्रन में 1700 घंटे की उड़ानें की जिसमें से 900 घंटे की महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ले जाने की उड़ानें हैं। उन्होंने लगभग 350 घंटे की प्रशिक्षणात्मक उड़ानें भी कीं। वह एच० एस० 748 वायुयान के टाइप परीक्षक भी हैं।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर स्वतंत्र कुमार गोयल ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरुप व्यावायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

21. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अविनाश चन्द्र चोपड़ा (7604) जनरल ड्यूटीज (पाइलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अविनाश चन्द्र चोपड़ा हेलीकोप्टर यूनिट में अगस्त 1967 से कार्य कर रहे हैं। इस अवधि में उन्होंने बहुत से बचाव तथा हताहत निष्कासन के कार्यों में भाग लिया तथा 600 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें कीं। जुलाई 1967 में उन्होंने खराब मौसम में एक दुर्घटनाग्रस्त परिवहन वायुयान की खोज के लिये उड़ानें कीं। अन्त में वे दुर्घटना स्थल का पता लगाने में सफल हुये और उन्होंने नष्ट वायुयान को ढूंढ लिया। उन्होंने कच्ची हवाई पट्टी पर वायुयान को उतारने का भारी खतरा उठाया तथा अकेले बचे हुए व्यक्ति को निकालने में सफल हुये।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अविनाश चन्द्र चोपड़ा ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

22. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट गुरमीत सिंह मान (7668) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

4 जनवरी, 1968 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट गुरमीत सिंह मान लड़ाकू प्रशिक्षण उड़ान से वापस आ रहे थे तब उन्होंने देखा कि उनके वायुयान का लोंगिट्यूडिनल नियंत्रण अवरुद्ध हो गया है। पावर या मानवीय नियंत्रण के अवरोध को हटाने का बार-बार किया गया प्रयास असफल रहा और वे अकेले इलेट्रिकल ट्रिमर के सहारे रह गये। निर्णयतापूर्वक, उच्च श्रेणी की वायुसैनिक चातुर्य से वे केवल ट्रिमर की सहायता से वायुयान को नीचे ले आये और इस प्रकार से उन्होंने मूल्यवान वायुयान को बचा लिया।

इस कार्य में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट गुरमीत सिंह मान ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

23. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हैरल्ड क्लिमेंट डिमोस (6891) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

1963 से फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हैरल्ड क्लिमेंट डिमोस हेलीकाप्टर के पायलट हैं। उन्होंने 900 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें कीं जिसमें अग्रिम क्षेत्रों की 1000 संक्रियात्मक उड़ानें हैं। उन्होंने सदा संक्रियात्मक कार्यों के लिए स्वयं को अर्पण किया। उन्होंने नागालैंड में रसद गिराने का कार्य किया। सितम्बर, 1967 में नानक सागर बांध फटने से आस-पास की नागरिक जनता, पशुओं तथा सम्पत्ति को खतरा पैदा हो गया था तब उन्होंने बहुत सी उड़ानें कठिन तथा संकटपूर्ण परिस्थितियों में कीं। दूसरे अवसर पर उन्होंने दो आहतों को अपने जीवन को खतरे में डालकर 15 फुट बर्फ से ढके क्षेत्र से निकाला। 8 अप्रैल 1968 को जब एक वायुसेना अधिकारी कानपुर से 30 मील दक्षिण-पूर्व की ओर वायुयान से कूदा और सख्त घायल हो गया था, तब अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वे अन्धकार में कानपुर से उड़े और दुर्घटना-स्थल पर पहुंचे तथा वायुसेना अधिकारी को सुरक्षित रूपमें कानपुर हवाई अड्डे पर ले आए।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफिटनेन्ट हैरल्ड क्लिमेंट डिमोस ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

24. फ्लाइट लेफिटनेंट मृगेन्द्र नारायण सिंह (10384) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

अगस्त 1963 से फ्लाइट लेफिटनेंट मृगेन्द्र नारायण सिंह नागालैंड, नेफा तथा मीजो पहाड़ियों में सक्रिय हैलीकोप्टर संक्रियाओं में लगाए गए हैं। उन्होंने कुल 1093 घन्टे की उड़ानें कीं जिसमें 55 घन्टे की संक्रियात्मक कार्यों की उड़ान शामिल हैं। उन्होंने बहुत सी उड़ानें हताहतों के निष्कासन तथा सेना को उपद्रवियों के निकट तक ले जाने के लिये की। विपरीत मौसम तथा कठिन भूमि में उड़ान के लिये उनकी इच्छा ने उनके कनिष्ट कर्मचारियों के लिये प्रेणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफिटनेंट मृगेन्द्र नारायण सिंह ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरुप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

25. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों

(6756) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों पूर्वी क्षेत्र में एक हेली-कोप्टर यूनिट में सेवा कर रहे हैं। बहुत से अवसरों पर उन्होंने व्यक्तिगत जोखिम उठाकर सफलतापूर्वक रसद गिराने तथा हताहतों को कठिन स्थानों से निकालने का कार्य किया। उन्होंने नेफा, नागालैण्ड तथा मीज़ो पहाड़ियों पर हेलीकोप्टर से 1100 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें कीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रशिक्षक के कार्य भी किये तथा सदा दूसरों के लिये उदाहरण प्रस्तुत करते रहे।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

26. फ्लाइट लेफ्टिनेंट तरलोक सिंह धालीवाल

(6350) जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट तरलोक सिंह धालीवाल पूर्वी क्षेत्र में वायु अनुरक्षण के रूप में परिवहन स्क्वाड्रन में पायलट का कार्य करते रहे हैं। वह योग्यता प्राप्त उड़ान प्रशिक्षक हैं तथा उन्होंने 3360 घंटे की उड़ाने की हैं जिन में से 1650 घंटे की संक्रियात्मक उड़ाने हैं। 1962 में चीनी आक्रमण के दौरान उन्होंने रसद गिराने के लिये बहुत सी उड़ाने कीं। उनका मीज़ो पहाड़ियों तथा नेफा के भूभाग के पूर्ण ज्ञान तथा अग्रिम अवतरण स्थलों में उनके द्वारा किये गये बहुत से अवतरण कनिष्ठ पायलटों के प्रशिक्षण के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध हुए हैं। वह अपने कनिष्ठ साथियों के ये प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट तरलोक सिंह धालीवाल ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

27. 201000 मास्टर वारंट अफसर केनियथ राघव मेनन फ्लाइट इंजीनियर (**मरणोपरान्त**)

201000 मास्टर वारंट अफसर केनियथ राघव मेनन 1947 में भारतीय वायुसेना में भर्ती हुए थे। उन्होंने अपना सेवा-वृत्त 1955 में लिन्टेर में फ्लाइट इंजीनियर के रूप में प्रारम्भ किया तथा बाद में सुपर कान्सटेलेशन में परिवर्तन कर लिया। 1955 में वह परिवहन स्क्वाड्रन में तैनात किए गए जहां उन्होंने फ्लाइट इंजीनियर की हैसियत से उड़ानें आरम्भ की। उन्होंने 4000 घंटे की उड़ानें कीं जिस में अधिकांश वायुयान को अग्रिम अवतरण स्थलों में उतारने तथा रसद गिराने के कार्य सम्मिलित हैं। ऐसे ही एक संक्रियात्मक रसद गिराने के काम में उनकी मृत्यु हो गई।

आद्योपान्त मास्टर वारंट अफसर केनियथ राघव मेनन ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

28. 48040 वारंट सिगनलर बाबाजी श्रीपतराव मोरे

सिगनलर/एयर

अप्रैल 1963 से वारंट सिगनलर बाबाजी श्रीपतराव मोरे जम्मू तथा काश्मीर में भारी परिवहन स्क्वाड्रन में सेवारत हैं। उन्होंने अनेकों कठिन उड़ानों के लिये स्वयं को अर्पित किया तथा उन्होंने कुल 6350 घंटे की उड़ाने कीं जिसमें 2660 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें शामिल हैं। 1965 में भारत-पाक संघर्ष के समय उन्होंने 102 घंटे की उड़ानें कीं। उन्होंने 1060 उड़ानें रसद गिराने तथा अग्रिम अवतरण-स्थलों में उतरने के लिये कीं। अपने अनुभव तथा भूभाग के पूर्ण ज्ञान के कारण उन्होंने अपनी यूनिट को सौंपे गए कार्यों को पूर्ण करने में बड़ी सहायता की।

आद्योपान्त वारंट सिगनलर बाबाजी श्रीपतराव मोरे ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

29. 48861 वारंट सिगनलर जसवन्त जीत सिंह

सिगनलर/एयर

वारंट सिगनलर जसवन्त जीत सिंह मार्च 1963 से जम्मू तथा काश्मीर में भारी परिवहन स्क्वाड्रन में सेवा कर रहे हैं। इससे पहले वे दो परिवहन स्क्वाड्रनों में सेवा कर चुके थे जिन्हें जम्मू-काश्मीर में विमानवहन के कार्य पर लगाया गया था। उन्होंने कुल 4250 घंटे की उड़ानें कीं जिसमें से 1520 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें हैं। उन्होंने सदा संकट पूर्ण संक्रियात्मक कार्यों के लिये स्वयं को अपर्ण किया है।

आद्योपान्त वारंट सिगनलर जसवन्त जीत सिंह ने साहस, व्यावसायिक कुशलता तथा उच्च श्रेणी की कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

30. 202348 वारंट सिगनलर जगदीश सिंह गिल

सिगनलर/एयर

वारंट सिगनलर जगदीश सिंह गिल मई 1961 से एक भारी परिवहन स्कवाड्रन में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कुल 6800 घंटे की उड़ानें की हैं जिस में से 3000 घंटे की संक्रियात्मक उड़ाने हैं। उनके अनुभाग को कार्य करने तथा योजना बनाने में उनके विस्तृत अनुभवों से बड़ी सहायता मिली है। स्क्वाड्रन की भारी जिम्मे-दारियों के बावजूद भी वे बहुत से सिगनलरों को प्रशिक्षण तथा परिवर्तन करने के लिये उत्तरदायी हैं। 25 नवम्बर 1966 में जब दीर्घान्तर उड़ान में वायुयान के नम्बर 2 इंजन को आग लग गई तब वारंट सिगनलर गिल ने धैर्यपूर्ण साहस तथा महान सूझबूझ के वायुकर्मी दल की स्थिति को काबू में लाने में मदद की। तमाम उड़ान के दौरान न केवल संचार के दुहरे मार्ग बनाए रखा गया बल्कि मोड़ के हवाई अड्डे को आपत की स्थिति से निपटने की चेतावनी भी दी गई थी।

आद्योपान्त वारंट सिगनलर जगदीश सिंह गिल ने भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया।

नागेंद्र सिंह, राष्ट्रपति के सचिव

गृह मंत्रालय

नियम

नई दिल्ली, दिनांक 12 अप्रैल 1969

सं० 8/3/69-के० से० (2)—दिसम्बर 1969 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा के उच्च श्रेणी ग्रेड के लिए प्रवर सूची में सम्मिलित करने के लिए एक सीमित विभागीय प्रतियोगिता परीक्षा लेने के लिए नियम सामान्य सूचनार्थ प्रकाशित किये जाते हैं।

2. प्रवर सूची में सम्मिलित किये जाने वाले व्यक्तियों की संख्या आयोग द्वारा जारी किये गये नोटिस में बता दी जायेगी। भारत सरकार के निश्चयानुसार निर्धारित अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिए पद आरक्षित रखे जायेंगे।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों का अर्थ है अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति आदेश (संशोधन) अधिनियम 1956, संविधान (जम्मू व कश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956 संविधान (अन्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1959, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित जाति आदेश, 1962, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1962, संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964, और संविधान (अनुसूचित आदिम जाति) (उत्तर प्रदेश) आदेश 1967 के साथ पठित अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों की सूचियां (संशोधन) आदेश 1956 में उल्लिखित कोई भी जाति या आदिम जाति।

3. संघ लोक सेवा आयोग द्वारा इस परीक्षा का संचालन इन नियमों के परिशिष्ट में विहित विधि से किया जायेगा।

परीक्षा की तिथि तथा स्थान आयोग द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

4. केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा में स्थायी या नियमित रूप से नियुक्त किया गया ऐसा कोई भी अस्थायी निम्न श्रेणी लिपिक इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा जो 1 जुलाई 1969 को निम्नलिखित शर्तें पूरी करता हो :—

(1) **सेवावधि** :—जिस व्यक्ति की निम्नलिखित स्थितियों में कम से कम पांच वर्ष की स्वीकृत तथा लगातार सेवा हो :—

(क) केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा का निम्न श्रेणी ग्रेड, या

(ख) केन्द्रीय या राज्य सरकार के अधीन कोई ऐसा ग्रेड जिसका न्यूनतम और अधिकतम वेतनमान 1 जुलाई 1959 से पहले क्रमशः 55 तथा 130 रुपये से कम न रहा हो और 1 जुलाई, 1959 के पश्चात् क्रमशः 110 और 180 रु० से कम न रहा हो।

टिप्पणी :—स्वीकृत तथा लगातार सेवा की 5 वर्ष की सीमा उस अवस्था में भी लागू होगी यदि किसी उम्मीदवार की कुल विचारणीय सेवा का कुछ भाग केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा में निम्न श्रेणी लिपिक के रूप में रहा हो और कुछ भाग उपरोक्त (क) तथा (ख) में वर्णित कहीं और की गई हो।

(2) **आयु** :—उसे 40 वर्ष से अधिक आयु का नहीं होना चाहिए। अर्थात् उसकी जन्म तिथि 1 जुलाई 1929 से पहले नहीं होना चाहिए।

टिप्पणी :—40 वर्ष की आयु सीमा केवल 1969 और 1970 में होने वाली परीक्षाओं पर ही लागू होगी। इसके पश्चात् आयुसीमा 30 वर्ष होगी।

परन्तु निम्नलिखित प्रवर्गों के व्यक्तियों के सम्बन्ध में आयु की ऊपरी सीमा में छूट दी जा सकती है :—

(i) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति से सम्बन्धित हो तो अधिक से अधिक 5 वर्ष तक;

(ii) यदि उम्मीदवार पूर्वी पाकिस्तान से आया हुआ वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो और 1 जनवरी 1964 या उसके बाद प्रव्रजन करके भारत में आया हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष तक;

(iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति से सम्बन्धित हो तथा पूर्वी पाकिस्तान से आया हुआ वास्तविक विस्थापित व्यक्ति भी हो और 1 जनवरी 1964 या उसके बाद प्रव्रजन कर भारत आया हो तो अधिक से अधिक 8 वर्ष तक;

(iv) यदि उम्मीदवार संघ राज्य क्षेत्र पांडिचेरी का निवासी हो और किसी स्तर पर उसकी शिक्षा फ्रेंच भाषा के माध्यम से हुई हो तो अधिक से अधिक 5 वर्ष तक;

(v) यदि उम्मीदवार लंका से आया हुआ वास्तविक देश-प्रत्यावर्तित भारतीय मूल का व्यक्ति हो और अक्तूबर 1964 के भारत लंका समझौते के अधीन पहली नवम्बर 1964 को या उसके बाद में लंका से भारत में प्रव्रजित हुआ हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष तक;

(vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति से सम्बन्धित हो तथा लंका से आया हुआ वास्तविक देश प्रत्यावर्तित भारतीय मूल का व्यक्ति हो और अक्तूबर, 1964 को या उसके बाद लंका से भारत में प्रव्रजित हुआ हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष तक;

(vii) यदि उम्मीदवार संघ राज्य-क्षेत्र गोवा दमन और दिव का निवासी हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष तक;

(viii) यदि उम्मीदवार भारतीय मूल का हो और केन्या, उगांडा और संयुक्त गणराज्य तंजानिया (भूतपूर्व टांगानिका और जंजीबार) से प्रव्रजित हो तो अधिक से अधिक 3 वर्ष तक;

(ix) यदि उम्मीदवार बर्मा से आया हुआ वास्तविक देश-प्रत्यावर्तित भारतीय मूल का व्यक्ति हो और 1 जून

1963 को या उसके बाद भारत में प्रव्रजित हुआ हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष तक;

(x) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति से सम्बन्धित हो और बर्मा से आया हुआ वास्तविक देश-प्रत्यावर्तित भारतीय मूल का व्यक्ति भी हो और 1 जून 1963 को या उसके बाद भारत में प्रव्रजित हुआ हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष तक;

(xi) किसी दूसरे देश से झगड़ों के दौरान अथवा किसी उपद्रवग्रस्त क्षेत्र में सैनिक कार्रवाइयों के समय अशक्त हुए तथा उसके परिणाम स्वरूप नौकरी से निर्मुक्त रक्षा-सेवा-कार्मिकों के लिए अधिक से अधिक तीन वर्ष तक; और

(xii) किसी दूसरे देश से संघर्ष के समय अथवा किसी उपद्रव ग्रस्त इलाके में सैनिक कार्रवाइयों के समय अशक्त हुए तथा उसके परिणामस्वरूप नौकरी के लिए, जो अनुसूचित जातियों अथवा अनुसूचित आदिम जातियों से सम्बन्धित हो, अधिक से अधिक 8 वर्ष तक।

उपर बताई गई स्थितियों के अतिरिक्त निर्धारित आयु सीमा में किसी भी अवस्था में छूट नहीं दी जायगी।

(3) **टाइपकारी परीक्षा** :—यदि किसी उम्मीदवार को निम्न श्रेणी ग्रेड में स्थायीकरण के उद्देश्य से आयोग की टाइपकारी की परीक्षा उत्तीर्ण करनें में छूट न मिली हो तो इस परीक्षा की अधिसूचना की तारीख को या इससे पहले यह टाइपकारी की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना चाहिए।

(4) ऐसे किसी उम्मीदवार को इस परीक्षा में तीन बार से अधिक भाग लेने की अनुमति नहीं दी जायगी जो किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का न हो, पांडिचेरी के संघ राज्य क्षेत्र का निवासी न हो या केन्या; उगांडा और तंजानिया संयुक्त गणतंत्र (भूतपूर्व टांगानिका और जंजीबार) से प्रत्यावर्तित न हो। यह प्रतिबन्ध 1969 में होने वाली परीक्षा से लागू है।

टिप्पणी (1): यदि कोई उम्मीदवार वस्तुतः परीक्षा के किसी एक या अधिक विषयों में भाग लेगा तो उसे परीक्षा में भाग लिया हुआ समझा जाएगा।

टिप्पणी (2) : ऐसे निम्न श्रेणी लिपिक जो सक्षम प्राधिकारी की अनुमति से निःसंवर्गीय पदों पर प्रतिनियुक्त हो, उन्हें अन्यथा पात्र होने पर इस परीक्षा में भाग लेने का पात्र समझा जायगा।

तथापि यह बात उन निम्न श्रेणी लिपिकों पर लागू नहीं होती जो निः संवर्गीय पदों पर नियुक्त किये गये हों या "स्थानान्तरित" रूप में अन्य सेवा में नियुक्त हों और निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहणाधिकार (लियन) न रखते हों।

5. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अन्तिम होगा।

6. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जायगा जब तक उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण-पत्र (सार्टिफिकेट आफ एडमिशन) न हो।

7. यदि कोई उम्मीदवार आयोग द्वारा इस बात के लिए दोषी घोषित किया जाए या कर दिया गया हो कि उसने किसी दूसरे व्यक्ति से अपनी परीक्षा दिलवाई है या जाली प्रमाण-पत्र आदि प्रस्तुत किये हैं या ऐसे प्रमाण पत्र प्रस्तुत किये हैं जिनमें कोई हेरा-फेरी की गई है या गलत या झूठे वक्तव्य दिए हैं या कोई महत्वपूर्ण तथ्य छिपाया गया है या परीक्षा में प्रवेश प्राप्त करने के लिए किसी और अनियमित या अनुपयुक्त तरीके से काम लिया है या परीक्षा भवन में अनुचित तरीकों से काम लिया है या काम में लाने की कोशिश की है या परीक्षा भवन में कोई अनुसूचित आचरण किया है या परीक्षा भवन में उसके पास अनधिकृत कागज, पुस्तकें या टिप्पणियां इत्यादि पाई जाए या ये उसे सुलभ हों, तो उस पर आपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रोशीक्यूशन) चलाया जा सकता है और साथ ही :—

(क) उसे हमेशा के लिए या किसी विशेष अवधि के लिए, आयोग, उम्मीदवार के चुनाव के लिए, उसके द्वारा ली जाने वाली परीक्षा या साक्षात्कार (इंटरव्यू) में शामिल होने से रोक सकता है।

(ख) उसके विरुद्ध उपयुक्त नियमों के अन्तर्गत अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकती है।

8. यदि कोई उम्मीदवार किसी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिये समर्थन प्राप्त करने की कोई कोशिश करेगा तो उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य करार दिया जायगा।

9. उम्मीदवारों को आयोग की विज्ञप्ति के अनुलग्नक-1 में निर्धारित शुल्क (फी) देना होगा।

10. परीक्षा के बाद हरेक उम्मीदवार को अन्तिम रूप से दिए गए कुल अंकों के आधार पर उनकी योग्यता के क्रम से उनके नामों की सूची बनाएगा और उसी क्रम से उतने ही उम्मीदवारों के नाम अपेक्षित संख्या तक उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में शामिल करने की सिफारिश करेगा। जो आयोग के निर्णय के अनुसार परीक्षा द्वारा योग्य माने गये हों।

लेकिन शर्त यह है कि आयोग अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के किसी ऐसे उम्मीदवार को जो किसी सेवा के के लिए आयोग द्वारा निर्धारित स्तर के अनुसार योग्य सिद्ध न हो प्रशासनिक कुशलता को ध्यान में रखते हुए उस सेवा पर नियुक्ति के लिए उपयुक्त घोषित कर दे तो उसकी उस सेवा में यथास्थिति अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित रिक्तियों पर नियुक्ति के लिए आयोग सिफारिश करेगा।

टिप्पणी : उम्मीदवारों को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि यह प्रतियोगिता परीक्षा है न कि अर्हक परीक्षा (क्वालीफाइंग एक्जामिनेशन)। इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में किसने उम्मीदवारों के नाम शामिल किये जायें। इसका निर्णय करने के लिए सरकार पूरी तरह सक्षम है। इसलिए कोई भी उम्मीदवार अधिकार के तौर पर इस बात का कोई दावा नहीं कर सकेगा कि उसके द्वारा परीक्षा में दिए गए उत्तरों के आधार पर उसका नाम प्रवर-सूची में शामिल किया ही जाय।

11. हर एक उम्मीदवार को परीक्षाफल की सूचना किस रूप में तथा किस प्रकार दी जाये, इसका निर्णय आयोग अपने विवेकानुसार करेगा और आयोग परिणामों के बारे में उनसे कोई पत्र-व्यवहार नहीं करेगा।

12. परीक्षा में उतीर्ण हो जाने मात्र से ही चुनाव का अधिकार तब तक नहीं मिलता जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए कि उम्मीदवार चुनाव के लिए हर प्रकार से पात्र और उपयुक्त है।

13. जो उम्मीदवार इस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन पत्र देने के बाद या परीक्षा में बैठ जाने के बाद केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा के अपने पद से त्याग पत्र दे देगा अथवा अन्य किसी प्रकार से उस सेवा को छोड़ देगा या उससे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेना या जिसकी सेवाए उसके विभाग द्वारा समाप्त कर दी गई हों या जो किसी नि:संवर्गीय पद या दूसरी सेवा में "स्थानान्तरण" द्वारा नियुक्त किया जा चुका हो और निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहणाधिकार न रखता हो, वह इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा।

तथापि, यह उस निम्न श्रेणी लिपिक पर लागू नहीं होता जो सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से किसी नि:संवर्गीय पद पर प्रतिनियुक्ति के रूप में नियुक्त किया जा चुका हो।

एम० के० वासुदेवन,
अवर सचिव

परिशिष्ट

परीक्षा निम्नलिखित योजना के अनुसार होगी :—

भाग—I, नीचे परिच्छेद 2 में बताए गए विषयों की कुल 300 अंकों की लिखित परीक्षा।

भाग—II, आयोग द्वारा अपने विवेकानुसार उम्मीदवारों के सेवा वृतों (रेकार्ड आफ सर्विस) का मूल्यांकन, जिसके लिए अधिकतम अंक 100 होंगे।

2. भाग—I में बताई गई लिखित परीक्षा के विषय प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए दिया जाने वाला समय, और उससे अधिकतम अंक इस प्रकार होंगे :—

विषय	दिया गया समय	अधिकतम अंक
(i) निबन्ध तथा सारांश लेखन .	2 घंटे	100
(ii) आलेखन व टिप्पण तथा कार्यालय पद्धति	2 घंटे	100
(iii) सामान्य-ज्ञान .	2 घंटे	100

3. परीक्षा का पाठ्य विवरण संलग्न अनुसूची में दिये अनुसार होगा।

4. सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में लिखने होंगे।

5. उम्मीदवारों को सभी उत्तर अपने हाथ से लिखने होंगे। किसी भी हालत में उन्हें उत्तर लिखने के लिए अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

6. आयोग अपने विवेक से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्वालीफाईंग नम्बर) निर्धारित कर सकता है।

7. केवल कोरे सतही ज्ञान के लिए अंक नहीं दिये जायेंगे।

8. खराब लिखावट के कारण लिखित विषयों के अधिकतम अंकों के 5 प्रतिशत अंक काट दिए जायेंगे।

9. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात पर विशेष ध्यान रखा जायगा कि भावाभिव्यक्ति कम से कम शब्दों में, क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से और ठीक-ठीक की गई है।

अनुसूची

परीक्षा का पाठ्य-विवरण

(1) **निबन्ध तथा सारांश लेखन** :—विहित विषयों में से एक पर अंग्रेजी में निबन्ध लिखना होगा। संक्षेप सारांश लिखने के लिये सामान्यत: अनुच्छेद दिये जायेंगे।

(2) **टिप्पण व आलेखन तथा कार्यालय पद्धति** :—इस प्रश्न-पत्र का प्रयोजन सचिवालय तथा सम्बद्ध कार्यालयों में कार्यालय पद्धति और सामान्यत : टिप्पण व आलेखन तथा समझने में उम्मीदवारों की योग्यता जांचना है। उम्मीदवारों को चाहिए कि इसके लिए वे "कार्यालय पद्धति की नियम-पुस्तक" ("मैन्वल आफ आफिस प्रोसीजर") तथा "रूल्ज आफ प्रोसीजर एण्ड कण्डक्ट आफ बिजीनेस इन लोक सभा एण्ड राज्य सभा" पढ़े।

(3) **सामान्य-ज्ञान** :—सामान्य-ज्ञान के प्रश्न-पत्र का उद्देश्य भारतीय भूगोल तथा देश का प्रशासन, और सामयिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के सम्बन्ध में उम्मीदवारों का ज्ञान जांचना होगा।

वित्त मंत्रालय

(राजस्व तथा बीमा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 31 मार्च 1969

संकल्प

सं० 7(2)-बीमा II/67—भारतीय जीवन बीमा निगम के खर्च के वर्तमान उच्चस्तर के कारणों की जांच पड़ताल करने के लिये नियुक्त समिति की अवधि को, जिसे सरकार ने पिछली बार वित्त मंत्रालय (राजस्व तथा बीमा विभाग) के 2 जनवरी 1969 के इसी संख्या के संकल्प द्वारा 31 मार्च 1969 तक बढ़ाया था, उसे एतद्द्वारा 30 अप्रैल 1969 तक की अतिरिक्त अवधि के लिये बढ़ाया जाता है।

आदेश : आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी सम्बन्धित व्यक्तियों/संस्थाओं को भेज दी जाय।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सकल्प को सर्व-साधारण की सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय ।

राज के० निगम, उप सचिव

स्वास्थ्य, एवं परिवार नियोजन, तथा निर्माण, आवास और नगर विकास मंत्रालय

(निर्माण आवास और नगर विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 26 मार्च 1969

संकल्प

विषय :—भारत सरकार के मुद्रणालयों में उत्पादन की लागत की जांच करने के लिए तथा गैर-सरकारी क्षेत्र के मुद्रणालयों की लागत से तुलना करने के लिए लागत अध्ययन टीम (कास्ट स्टडी टीम) का गठन ।

सं० एस० एण्ड पी० 2/27/(5)/53-पी० 1—मुख्य नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखनसामग्री कार्यालय के परियोजना अधिकारी, श्री सी० ई० जेम्ज़ के, भारत सरकार मुद्रणालय, वे० एस० राय रोड, कलकत्ता में महा प्रबन्धक के रूप में स्थानान्तरित होने पर, मुख्य नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखनसामग्री कार्यालय के नियंत्रक, मुद्रण (प्रतिमान) (नार्म्ज़), श्री ए० सी० दास गुप्ता को, श्री जेम्ज़ के स्थान पर, लागत अध्ययन टीम (कास्ट स्टडी टीम) के सदस्य के रूप में नामज़द किया गया है, जिस का गठन, यथा संशोधित निर्माण, आवास, तथा पूर्ति मंत्रालय के संकल्प संख्या एस० एण्ड पी० 2/27(5)/पी० 1 दिनांक 9 फ़रवरी 1968 के अनुसार हुआ है ।

टीम के विचारणीय विषय अपरिवर्तित बने रहे ।

आदेश :

1 आदेश दिया जाता है कि संकल्प भारत सरकार के सभी मत्रालयों को भेज दिया जाय ।

2 यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय ।

पं० प्रभाकर राव, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1969

No. 11-*Pres./*69.—The President is pleased to approve the award of the PARAM VISHISHT SEVA MEDAL to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Lieutenant General APPARANDA CHENGAPPA IYAPPA,
(IC-89) Signals (Retd.)

Lieutenant General BIDYAPATI BHATTACHARJYA
(MR-147) Army Medical Corps

Lieutenant General GOPAL GURUNATH BEWOOR
(IC-129) Infantry

Lieutenant General RAJINDER SINGH PAINTAL
(IC-125) Infantry

Major General PANAVELIL THOMAS JOSEPH
(MR-150) A.V.S.M. Army Medical Corps

Major General INDERJIT SINGH GILL
(IC-1641), MC Infantry

Rear Admiral KESAVAPILLAI RAMAKRISHNAN NAIR
Indian Navy

Air Vice Marshal HARI CHAND DEWAN
(1598) General Duties (Pilot)

Air Vice Marshal TEJA SINGH VIRK
(1621) General Duties (Navigator)

No. 12-*Pres./*69.—The President is pleased to approve the award of the ATI VISHISHT SEVA MEDAL to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

Air Vice Marshal SYED ABBAS HUSSAIN
(1706) General Duties (Pilot)

Brigadier NAVELIKARA RAVI VARMA
(IC-5613) Infantry

Brigadier ABAN NAIDU
(IC-717) Infantry

Brigadier KARAM SINGH
(IC-1274) Vr. C. Armoured Corps

Brigadier GURDIAL SINGH
(IC-621) Artillery

Brigadier ADI KAITHUSAROO SAHUKAR
(IC-1081) Army Service Corps

Brigadier DILJIT SINGH VIRK
(IEC-1447) Army Postal Service

Brigadier OM PARKASH DUTTA
(IC-857) Engineers

Brigadier LESLIE ERIC REGINALD DON AVENTURE FERRIS
(IC-471) Gorkha Rifles

Brigadier KALU JAVHERMAL SHAHANEY
(IC-1631) Engineers

Brigadier BANT SINGH
(IC-5249) Infantry

Brigadier RAGHUNATH SINGH HOON
(MR-235) Army Medical Corps

Brigadier AGA CUMBER ALLY
(IC-1944)

Brigadier DINKAR KRISHNA CHANDORKAR
(IC-3343) Rajputana Rifles

Air Commodore ANAND RAMDAS PANDIT, DFC
(1707) General Duties (Pilot)

Air Commodore HEMONTO KUMAR BOSE
(2348) General Duties (Pilot)

Air Commodore SAROSH JAHANGIR DASTUR
(1792) General Duties (Pilot)

Air Commodore THIRUMALAI SRINIVASAN
(2416) TECHNICAL/SIGNALS

Air Commodore TAPESWAR BASU
(1797) General Duties (Navigator)

Colonel GOPAL VASUDEO CHAPHEKAR
(MR-270) Army Medical Corps

Colonel ANAND VINAYAK MUJUMDAR
(IC-3757) JAG's Department

Captain GARNET MILTON SHEA
Indian Navy

Captain VIVIAN ERIC CHARLES BARBOZA
Indian Navy.

Captain KRISHNA DEV(S)
Indian Navy

Group Captain SITA RAM MULLICK
(2654) Administrative & Special Duties

No. 13-*Pres.*/69.—The President is pleased to approve the award of the VISHISHT SEVA MEDAL to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

Colonel TILAK RAJ CHOWLA
(IC-1968) Artillery

Colonel GURDIAL SINGH BEDI
(IC-1975) Electrical Mechanical Engineers

Colonel ANWER HUSSAIN
(IC-812) Army Ordnance Corps

Colonel RASAMAY GANGULY
(MR-499) Army Medical Corps

Lieutenant Colonel JOHN JOSEPH FONSECA
(SL 301) Army Jhysical Training Corps

Lieutenant Colonel BIRENDRA KUMAR BHATTACHARYA
(IC-5699) Madras

Lieutenant Colonel MANOHAR LAL ANAND
(IC-4641) Electrical & Mechanical Engineers

Lieutenant Colonel MATHUMMAL GOVINDAN
(IC-9244) Intelligence Corps

Lieutenant Colonel PRAN NATH ANAND
(IC-4577) Assam Rifles

Lieutenant Colonel JOGINDER SINGH GHARAYA
(IC-1984) KC, Bihar

Lieutenant Colonel ARUN CHOWDHURY
(IC-4631) Engineers

Commander JAYANT GANPAT NADKARNI
Indian Navy

Commander KRISHNASWAMI SUBRAMANIAN
Indian Navy

Acting Commander SUBRAMANIAM KALIDOS
Indian Navy

Acting Commander MOHD HANIF USMAN KHAN
Indian Navy

Acting Commander OM PRAKASH SHARMA
Indian Navy

Acting Commander AMRESHWAR NATH THUKRAL
Indian Navy

Wing Commander VARADA KAGENDRA SUNDARA RAO
(3267) Equipment

Wing Commander VIDYA SAGAR LAKHANPAL
(3706) Equipment

Wing Commander BANGALORE MADHAVARAYA UMBERKOMAN
(2662) Accounts (Retd.)

Wing Commander DINKAR VISHVANATH DESHPANDE
(4305) Meteorological

Wing Commander CHANDRAMOWLESWARAN
(3796) Technical/Signals

Wing Commander VASANT MARUTIRAO WARTY
(4059) Technical/Signals

Wing Commander ERASSERI PATHAYAPURA RADHAKRISHNAN NAIR
(3837), General Duties (Navigator)

Major BHUVANESHWARI PRASAD BAJPAYEE
(IC-8271) Engineers

Major HIRAN KUMAR SARKAR
(MR-1434) Army Medical Corps

Lieutenant Commander ARINDAM GHOSH
Indian Navy

Lieutenant Commander MAHENDRA PAL WADHAWAN
Indian Navy

Squadron Leader PARDUMAN KUMAR JAIN
(4566) Administrative & Special Duties

Captain DWIJENDRA KISHORE GUHA ROY
(SL-478) Special List

Captain DHONDUP WANGYAL LAMA
(IC-18303) Artillery

Captain AMOD KUMAR GUPTA
(M-31071) Army Medical Corps

14031 Subedar Major ISHORI DUTT CHHETRI
Assam Rifles

JC-6618 Subedar (Surgical Assistant) VED PARKASH MEHTA
Army Medical Corps

JC-26563 Subedar (Ambulance Assistant) WAMAN
Army Medical Corps

JC-12094 Subedar LAXMI DATT
Intelligence Corps

JC-29367 Subedar NETHAT BALAKRISHNAN NAIR
Signals

TJ-974 Subedar C. J. JOSEPH
Territorial Army

KARTAR SINGH SALARIA
Chief Aircraft Handler (No. 35548)

PULIKAL MANAYALIL MOHAMMED
Chief Petty Officer Cook (S) (No. 35341)

K. M. DAMODARAN NAIR
Stores Chief Petty Officer (No. 31299)

SANKARAN THAMPI NARAYANAN NAIR
Chief Petty Officer (No. 33845)

DHIRENDRA NATH CHAKRAVARTHY
Chief Petty Officer (No. 34014)

THANNAIYANCHURI SHANKARAN NAIR
Chief Petty Officer (No. 35813)

PILLAPPADDY KUNHI KANNAN
Chief Petty Officer (No. 10241)

20742 Master Warrant Officer MAVILAKANDY NARAYANAN
Clk. GD

6437763 Dafadar KAIBAL MALIKO
Army Service Corps

204738 Sergeant MAHESH NATH BHAN
Fitter II Engines

400594 Sergeant SYED MUNIRUDDIN
Fit. Armour

218931 Corporal VETTUKUZHYIL SCARIA CHACKO SCARIA
Fitter Mechanical Transport

215745 Corporal MUKKANAMCHARIL VARKEY JOSEPH
Wireless Operator Mechanics (I)

No. 14-*Pres.*/69.—The President is pleased to approve the award of the KIRTI CHAKRA for conspicuous gallantry to :—

1. Shri Babu Singh.
2. Shri Ram Nath.
3. Shri Vishwanath Singh.
4. Shri Mahadeo Singh.
5. Shri Kashiram Singh.
6. Shri Ajab Singh
7. Shri Ram Bharose.

(*Effective date of award*—21st October, 1967).

On 21st October 1967, the notorious dacoit Nathu Singh with his gang of 12-13 persons entered village Bindwa of Madhya Pradesh and surrounded the houses of Babu Singh and his near relatives. From a commanding position, the dacoits started firing on the house of Babu Singh and also set on fire the houses of two other villagers. Sarvashri Babu Singh, Ram Nath, Vishwanath Singh, Mahadeo Singh, Kashiram Singh, Ajab Singh and Ram Bharose organised defence and, using their licenced fire-arms as well as stones and bricks, offered determined resistance to the dacoit gang and injured one of them. The dacoits were armed with sten-gun, automatic rifles etc., but faced with the heroic resistance of the villagers they abandoned their attack and fled.

In this action, Sarvashri Babu Singh, Ram Nath, Vishwanath Singh, Mahadeo Singh, Kashiram Singh, Ajab Singh and Ram Bharose displayed conspicuous gallantry and determination.

8. Captain SHREERAM RAJU KOSURI (EC 55333), Assam Rifles.

(*Effective date of award*—18th November, 1967).

On 18th November 1967, Captain Shreeram Raju Kosuri was informed by the Brigade Commander that hostiles, after over-running a police post, were camping at a place in the Mizo Hills area. On receiving orders to attack the hostile position, he moved there with his men. The hostiles opened fire with eight Light Machine Guns and with other small arms from three different directions. After a brief hand-to-hand fight, the hostiles, whose strength was well above a hundred, fled leaving behind four dead and a large quantity of arms and ammunition.

In this action, Captain Shreeram Raju Kosuri displayed conspicuous gallantry and leadership.

9. 4240221 Sepoy GORAKH NATH SINGH
Bihar Regiment (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—20th March, 1968).

On 20th March 1968, at about 1630 hours, a column of an Infantry Unit was ambushed by hostiles in the Mizo Hills. Sepoy Gorakh Nath Singh, who was in the leading section, was wounded among others, but undaunted he continued to fire grenades at the hostile position. He then crawled to one of his comrades who had been injured. Disregarding heavy fire from the hostiles, he applied first aid dressings to the wounded man and then taking the grenades he had with him used them against the hostiles. He then crawled to where the leader of the column had fallen, removed grenades from him and fired them at the hostiles. Meanwhile the hostiles concentrated all their fire at him as a result of which he was killed on the spot.

In this action, Sepoy Gorakh Nath Singh displayed exemplary courage and determination.

10. 6356426 Lance Naik JITENDRA BISWAS
Army Service Corps.

(*Effective date of award*—11th May, 1968).

On 11th May 1968, Lance Naik Jitendra Biswas and four ORs of an Army Supply Corps Company (Air Despatch) took off in an Indian Air Force Dakota to drop supplies on a post in Mizo Hills. Soon after taking off, the aircraft developed engine trouble and started losing height. Realising that the aircraft would crash any moment, Lance Naik Jitendra Biswas ordered his men to follow the emergency crash drill. He himself led his men and started unleashing and ejecting the load. Soon after the crash in which the ejection crew miraculously escaped sustaining only minor injuries, Lance Naik Biswas immediately organised his men for rescue work. The crew cabin wherein four I.A.F. officers were trapped was enveloped by flames. Without regard for his personal safety, Lance Naik Biswas rushed inside the burning cabin to extricate the I.A.F crew. He succeeded in pulling out two unconscious officers whose uniform were ablaze. He repeatedly entered the burning cabin till he himself became unconscious owing to severe burns on his hands, face and body. The initiative and cool courage shown by Lance Naik Jitendra Biswas in a difficult situation saved a number of valuable lives.

11. 8013933 Pioneer MOOL SINGH
Pioneer Corps (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—5th October, 1968).

On the night of 5th October 1968, when all the men of a detachment, which was detailed to take part in an exercise were asleep in their camp, Pioneer Mool Singh was on sentry duty. It was raining heavily and it was pitch dark. Pioneer Mool Singh heard the noise of something rolling down towards the camp. Realising that it was a landslide, he at once raised an alarm and, in utter disregard of his personal safety, started physically pulling the men out of their beds. He continued doing so until he himself was buried under the landslide and lost his life. In this calamity, twenty-six pioneers died and twenty-eight were injured. Of those saved, eight men had been pulled out by pioneer Mool Singh and eighteen were able to escape to safety on being awakened by him.

In this action, Pioneer Mool Singh displayed conspicuous gallantry and initiative.

No. 15-*Pres.*/69.—The President is pleased to approve the award of the SHAURYA CHAKRA for acts of gallantry to :—

1. 1510420 Lance Havildar MUKHTIAR SINGH
Engineers.

(*Effective date of award*—29th January 1968).

Lance Havildar Mukhtiar Singh was serving in an Engineer Regiment which was deployed for reconstructing a special type of Bailey suspension bridge over a river. A diversionary bridge had fallen into the river and recovery work was in progress. On 29th January 1968 due to heavy rains, the river started rising rapidly and it was feared that the diversionary bridge might be washed-away. Lance Havildar Mukhtiar Singh volunteered for the task of securing the bridge and proceeded towards it in a boat along with a JCO. The boat capsized in midstream and the JCO was being swept away. Lance Havildar Mukhtiar Singh tried to save the JCO but failed in his attempt. In the meantime, the drowning JCO got stuck in the bridge. An alarm was raised and a rescue operation was organised. Lance Havildar Mukhtiar Singh who had by then swam out of the river again volunteered and succeeded in rescuing the JCO.

In this action, Lance Havildar Mukhtiar Singh displayed exemplary courage and determination.

2. Major KULDIP SINGH MALIK (IC-12249)
Dogra

(*Effective date of award*—20th April 1968).

On the night of 20th/21st April 1968, Major Kuldip Singh Malik was the platoon Commander of a unit which was assigned the task of raiding and destroying a hostile hide-out located in thickly wooded jungle in the Mizo Hills. After a march of approximately 9 hours through difficult terrain, the platoon had reached within 125 yards of the hide-out when the hostiles opened fire with a light machine gun. Due to dense vegetation and steep slopes, it was difficult for the platoon to spread out and as a result it suffered three casualties. Despite intense automatic and small arms fire from the hostiles on the platoon, Major Kuldip Singh Malik manoeuvred the leading section close to the camp and silenced the hostile light machine gun by throwing grenades. Thereafter, he led his men in assaulting the hostile camp and succeeded in capturing it.

In this action, Major Kuldip Singh Malik displayed exemplary courage and leadership

3. Captain SAUMITRA RAY (EC-55979)
Rajput.

(*Effective date of award—6th June* 1968).

On the night of 6th/7th June 1968, on receipt of information that some armed hostiles were camping in the Mizo Hills area, Captain Saumitra Ray took a platoon column to locate the hide-out and to destroy it. The column had to wend its way through thick jungle along treacherous and almost invisible jungle trails. It was pitch dark and raining torrentially. It was past midnight when the column started creeping towards the suspected hide-out. Suspecting that the hostiles might have become aware of the movement of the column due to unavoidable noise, Captain Ray, with 5 ORs and a JCO proceeded further leaving the rest of the column behind. On locating the hide-out he deployed his small party to cover all the exists. With one of his men he charged into the hide-out and killed the sentry and two more hostiles. The remainder of the hostiles who rushed through the exists to make good their escape were also killed. In this encounter, nine hostiles were killed, two rifles and some ammunition and important documents were recovered.

In this action, Captain Saumitra Ray displayed courage and leadership.

4. DASHARATH JAMBE.
Chief Petty Officer (No. 44988) (*Posthumous*)

5. ASHIT CHANDRA BHADURI,
Petty Officer (No. 45136)

(*Effective date of award—7th June*, 1968).

On 7th June, 1968, INS GULDAR was detailed to salvage INS SUKANYA which had run aground on a treacherous sand bank off FALSE DIVI point in NIZAMPATTAM Bay near the mouth of River Krishna. INS GULDAR could not reach nearer than 500 yards to INS SUKANYA due to heavy breakers and shallow water, and it was not possible to despatch a line to the stranded vessel by throwing or through mechanical means. Efforts were made to float a line down to INS SUKANYA from a boat with the help of a buoy but this also proved fruitless. All other means of passing a line to INS SUKANYA having failed, it was decided to send a line with a swimmer. Chief Petty Officer Jambe and Petty Officer Bhaduri volunteered to undertake the task. They swam with nylon lines attached to them to within a few yards of the stranded vessel, when they encountered a strong current. Chief Petty Officer Jambe was swept away and lost his life. Petty Officer Bhaduri, who was also swept away by the current, after a long struggle, which became all the more difficult because of the nylon line secured to him, managed to reach INS SUKANYA and was able to establish contact by rope between INS GULDAR and the stranded vessel.

In this operation, Chief Petty Officer Dasharath Jambe and Petty Officer Ashit Chandra Bhaduri displayed exemplary courage and devotion to duty.

6. 1239479 Gunner KESHAV DAYAL,
Artillery. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—18th June* 1968).

Gunner Keshav Dayal, while on annual leave, was travelling in an Uttar Pradesh Roadways bus on 18th June, 1968. The bus was looted by armed dacoits numbering over 10 near Shahjahanpur. The dacoits robbed the passengers of their valuables and also tried to misbehave with the women passengers. Gunner Keshav Dayal, in utter disregard of his personal safety, faced the armed dacoits with great determination, and though unarmed, forcefully resisted the dacoits in their nefarious deeds; but while doing so, he was shot dead by the dacoits.

In this action, Gunner Keshav Dayal displayed exemplary courage and determination.

No. 16-*Pres./69.*—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Lieutenant Colonel EDAYATHUMANGALAM NARAYANAN RAMADOSS (IC-1583.), Signals.

On 15th November 1967 there was a serious accident to Military Transport in an area in Assam in which 16 ORs were killed and 23 others injured, and a petrol tanker was damaged and started leaking. Lieutenant Colonel Ramadoss, who happened to arrive at the place of accident, immediately took effective steps for the quick evacuation of the injured and ensured that nothing caught fire. Again on 21st May 1968 he happened to arrive at the scene of another overturned burning military vehicle. One OR was lying pinned underneath the burning vehicle and the petrol tank was in danger of exploding at any minute. Realising the imminent danger, Lieutenant-Colonel Ramadoss took charge of the situation. He collected the civilians present there and had the vehicle lifted about a foot and pulled out the OR and thus saved his life.

In this action, Lieutenant-Colonel Edayathumangalam Narayanan Ramadoss displayed cool courage and leadership.

2. Major EIGIL NEIL GOKHALE (IC-11853)
Artillery.

Major Eigil Neil Gokhale was officiating Commanding Officer of a unit which was entrusted with the task of providing flood relief in the Jalpaiguri District, West of the River Tista, on 4th October 1968. On reaching Jalpaiguri, the party camped for the night at a place where relief operations were to be conducted next morning. During the night, the Tista Bund broke and submerged Jalpaiguri Town and the camp as the water level rose up to 12 feet. In utter disregard of his personal safety, he successfully got his men on top of the vehicles and thereby saved their lives. On the morning of 5th October 1968, when the water level came down to about 5-6 feet, he left his convoy and waded and swam towards his base camp. With the help of his men, he organised the rescue centre at a college premises and rescued about 300 women and children. In the afternoon, on being informed that many people were marooned on the north of the broad gauge railway line, Major Gokhale once again led his men to rescue the local population and saved about 500 people.

In this operation, Major Eigil Neil Gokhale displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

3. Major MANMOHAN SINGH (IC-18582),
Bihar.

In January 1967, Major Manmohan Singh's Company was sent to a village in an area in Mizo Hills which was infested with hostiles who had laid ambushes on the Security Forces and inflicted casualties. On 24th January 1967, Major Singh led a patrol and captured seven hostiles. During subsequent petrols, he again captured two hostiles and destroyed four hostile camps besides capturing a number of weapons. During May 1967, he led a patrol which located and destroyed the hostiles' headquarters which resulted in the capture of very valuable documents. Time and again he led patrols and captured important hostile leaders and destroyed their camps. As a result of the relentless operations conducted by Major Manmohan Singh, the hostiles' influence in the area has been effectively eliminated.

Throughout, Major Manmohan Singh displayed courage and leadership.

4. Major NAINAN KOVOOR (IC-5999),
Signals.

In October 1968, due to heavy floods, there was complete dislocation of telephone communications, both military and civil, from Gangtok to Siliguri. It was essential to restore these communications at the earliest moment. Major Nainan Kovoor was given the task of restoring telephone communications within Gangtok and from Gangtok to other important places. He organised and personally supervised the work of restoration of lines with great ingenuity, leadership and untiring zeal. He marched long distances along hazardous routes assessing damage and supervising the work of his line parties. Working round the clock, and disregarding his personal comfort and health, he ensured that telephone communications within Gangtok and outside were restored in record time.

Throughout, Major Nainan Kovoor displayed professional skill, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Army.

5. Major PLAKAL NARAYANIER SANKAR NARAYANAN (IC-6497), Engineers.

During the heavy rains and flood from 2nd October to 5th October 1968, when all roads and bridges from Gangtok to Siliguri along the National Highway and a subsidiary road were either washed away or considerably damaged, it had become necessary to restore road communications with utmost speed. Major Narayanan was given the task of opening a road which had 65 landslides. Major Narayanan moved the Regiment at night along difficult loads to the site of work with speed and personnally supervised road clearance. Working round the clock, untiringly and disregarding his health, he contributed in a good measure towards the opening of the road. Later, his Regiment was given the task of constructing a Bailey bridge. With his leadership, professional skill and drive, he got the construction completed in record time and opened it for traffic. Besides this, he also provided aid to a power house and sent a number of reconnaissance parties to obtain information about roads and bridges.

Throughout, Major Plakal Narayanier Sankar Narayanan displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

6. Major RAMESH MOHAN MURGAI (IC-13745).
Army Supply Corps.

Major Ramesh Mohan Murgai was detailed as the Commander of a convoy to evacuate thousands of marooned tourists including many foreigners and civilians from Darjeeling. Due to unprecedented floods and landslides, all communications had been disrupted. He operated his convoy along a narrow, steep disused road and rescued the stranded civilians. He worked non-stop from 9th October 1968 to 24th October 1968 carrying on his way up much needed provisions and medicines from Siliguri to Darjeeling.

In this operation, Major Ramesh Mohan Murgai displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

7. Major RUDRAPATNA GURURAMIAH SREENIVASA MURTHY (MR-919) Army Medical Corps.

Major Rudrapatna Gururamiah Sreenivasa Murthy was detailed in overall charge of the medical teams and sanitary sections in Jalpaiguri from 6th to 25th October 1968. He coordinated the work of the medical teams and maintained close liaison with the civil medical and health authorities. He was continuously on the move in the worst parts of the town and its neighbourhood assessing requirements and detailing medical personnel to deal with the problems as they arose. It was largely due to his efforts, planning and tact that the medical teams were able to get the materials in time and bring about a creditable output of inoculation, treatment and other measures. He provided efficient medical service to the afflicted population who were practically without any other form of medical cover at the time.

In this operation, Major Rudrapatna Gururamiah Sreenivasa Murthy displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

8. Captain LALCHUNGNUNGA SAILO (IC-14499), Assam.

On the 25th March, 1968, Captain Lalchungnunga Sailo was given the task of leading a special patrol of a few men into an area in Manipur State from where a large number of hostiles were operating. In spite of the dangers involved, he obtained information regarding two camps hostiles, and other information of hostiles' activities in the area, which was extremely useful in subsequent operations. This patrol also traced another hostile camp from which the hostiles had carried out ambushes against our troops. Later, he guided the troops in an attack on the camp. The attack was successful and the camp was destroyed. Casualties were inflicted on the hostiles and arms, ammunition and valuable documents were recovered.

Throughout, Captain Lalchungnunga Sailo displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

9. Captain MALKIT SINGH SANDHU (EC-58279), Engineers.

Captain Malkit Singh Sandhu was in command of a Field Company which was sent for flood relief operation to Jalpaiguri after the unprecedented flood in Tista river in October 1968. After being briefed by his superior officer at Jalpaiguri, he proceeded to position his Company and equipment close to the area of operations. On the morning of 5th October 1968, when water suddenly started to rise dangerously above the road level, he got down from his vehicle into fairly fast flowing water and encouraged his men to recover his vehicle and equipment including boats to a comparatively safer place. During the day, when the water receded to a manageable depth, he organised rescue operations through fast flowing waters and himself took command of a boat and rescued hundreds of flood victims to safer places. The Company saved at least 2000 lives by his daring and prompt rescue operation on 5th October 1968.

In this operation, Captain Malkit Singh Sandhu displayed courage and leadership.

10. Captain P. C. JOSHI (MS-7180), Army Medical Corps.

On 9th October, 1967, a patrol in an area in Jammu and Kashmir was subjected to heavy fire from Pakistani positions. Captain Joshi, who was the Resident Medical Officer of the battalion was sent to the place to which the casualties were to be evacuated. On arrival, he learnt that since the casualties were still exposed to Pakistani fire, it would take some time to evacuate them. He immediately decided to go up to where casualties were lying and attended to them there, disregarding his personal safety and despite heavy fire from Pakistani forces.

In this operation, Captain P. C. Joshi displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

11. 2/Lieutenant BHARAT PARKASH (SS-29967), Engineers.

2/Lieutenant Bharat Parkash was detailed for rescue operation in an area in North Bengal during the floods on the night of 4th/5th October 1968. Disregarding heavy rains and stormy weather, he continued the rescue work and ultimately succeeded in rescuing about 750 persons. While he was on rescue work, the water in the Tista River rose swiftly and the party with 2/Lieutenant Bharat Parkash was cut off till a special patrol established contact at 1815 hours on 5th October 1968. 2/Lieutenant Prakash was injured during the marconed people the boat overturned but he continued the course of the rescue work but undeterred he continued the rescue work. On 8th October 1968, being informed of another marooned party half a kilometre down the Tista River, he, with 6 men in a boat, rushed to the scene and found 5 persons floating supported on a thatched roof in the swift current. As the boat could not be taken close to thatched roof he along with a Sapper swam up to the thatched roof and dragged it out of the current. While transferring tht marooned people the boat overturned but he continued to hold on to thatched roof while in 6 to 8 feet of water. With the help of his men, he managed to refloat the boat and transferred all the five marooned persons into the boat.

In this operation, 2/Lieutenant Bharat Parkash displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

12. 2/Lieutenant GURINDER SINGH UPPAL (IC-17237) Garhwal Rifles.

During the night of 4th/5th October, 1968, Myanaguri area in North Bengal was inundated by flood waters from the river Tista and the water in the Jerda Nullah had reached within one foot of the road bridge over it. The waterway under the bridge was getting choked with weeds, debris and carcasses of cattle thereby restricting the flow of the water under it. The bridge and the approaches were in immediate danger of being washed away due to heavy pressure. 2/Lieutenant Gurinder Singh Uppal, who was ordered to clear the debris from the bridge area, quickly organised his platoon and with the help of bamboos and line bedding cleared the obstructions and saved the bridge and its approaches from being washed away or breached. In doing so, he himself had to step over the railing of the bridge, at considerable personal risk, to clear the debris. Again on 5th October 1968, he established contact with a Engineer detachment which was marooned in a village, which was 6 kilometres from Myanaguri town. Undaunted by the fact that the area in between was under 6 to 8 feet of fast flowing water and the boat was swept downstream a number of times, he opened up a maintenance route to them. Enroute, he also saved a young child clinging to a tree in the main stream.

In this operation, 2/Lieutenant Gurinder Singh Uppal displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

13. JC-16566 Subedar BADAN KUMAR SINGH, Bihar.

Subedar Badan Kumar Singh was senior JCO of a Company which was located in Mizo Hills area where the hostiles had been active from January 1967 to October 1967. As most of the non-commissioned officers and men of the Company were inexperienced, Subedar Singh used to accompany most of the patrols and displayed leadership of a high order. On 14th September 1967, he was Second-in-command of a patrol led by an officer. When the officer was wounded, Subedar Singh, with a small party, attacked the hostiles camp, and killed one hostile and captured four. During operations in the area, the Company killed and captured a large number of hostiles.

Throughout, Subedar Badan Kumar Singh displayed courage and leadership.

14. JC-14702 Subedar MULTAN SINGH, Intelligence Corps.

Subedar Multan Singh has been engaged on a special assignment involving the arduous job of collection of information.

On a number of occasions he displayed conspicuous bravery and managed to collect valuable information. He carried out all tasks allotted to him with vigour and energy, driving himself to his maximum capacity. His courage and devotion to duty were in the best traditions of the Army.

Throughout, Subedar Multan Singh displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

15. JC-60568 Subedar Major NAGAPPA NAIDU, Engineers.

As a result of unprecedented floods in North Bengal in October 1968, there was complete disruption of rail and road communications in this sector. Subedar Major Nagappa

Naidu was serving with the Army Engineer Regiment which was entrusted with the task of opening a vital road communication. The work was started on 5th October and completed on 25th October 1968. His part in the deployment of plant under the most difficult conditions was the primary factor which enabled the road to be opened in a short time. By his timely action and expert handling of the situation he saved a dozer precariously poised, which otherwise would have been lost.

In this operation, Subedar Major Nagappa Naidu displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

16. JC-20795 Subedar RAM RICHPAL, Pioneer Corps.

Subedar Ram Richpal and 79 Pioneers were camping in an area to take part in an exercise to be held from 3rd October to 10th October 1968. On the night of 4th/5th October 1968, when it rained very heavily, on hearing the night sentry shouting, he rushed out of his tent and saw the entire camp area being swept away by a landslide. He at once organised a rescue operation with the help of his own unaffected men and the men of the neighbouring units and managed to extricate a number of bodies that had been buried under the debris of the landslide. With determination and courage, he not only recovered the casualties but also retrieved Government property of large value.

In this operation, Subedar Ram Richpal displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

17. 6269040 Havildar MATA DIN BHARDWAJ, Signals.

On 6th June 1968, Havildar Mata Din Bhardwaj was in charge of man-packed rover group which accompanied the General Officer Commanding to a camp in Nagaland. During his stay with the rover group till 12th June 1968, Havildar Bhardwaj worked day and night to maintain the communications. He carried out varied tasks such as delivery of food to the forward troops, evacuation of casualties and local administration of the camp under adverse conditions and in close proximity of actual firing. He voluntarily took upon himself onerous duties and performed them with great devotion. He was instrumental in raising the morale of casualties by cheerfully foregoing his own comforts in order to provide comforts to others.

Havildar Mata Din Bhardwaj displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

18. 7027589 Havildar/Driver MANGRU RAM Electrical Mechanical Engineering.

On 9th October, 1968, Havildar Mangru Ram was detailed with his detachment, consisting of 1 non-commissioned officer, 6 ORs and two medium recovery vehicles, to proceed to Jalpaiguri town for the clearance of carcasses of animals drowned in the floods. The task involved the removal and lifting of carcasses from the houses and loading them into other vehicles for disposal. As five days had elapsed since their drowning, the carcasses were in advanced stage of decomposition and decay, and each one had to be slinged with ropes to prevent them from bursting and dis-integrating. The smell was unbearable. Realising that prompt removal of the carcasses was of paramount importance to prevent the spreading of disease, he applied himself and his men to the task in a most dedicated manner and worked round the clock without respite and with utter disregard to his personal safety and hazard to his health. He was mainly responsible for the removal of 959 carcasses within six days.

Throughout, Havildar/Driver Mangru Ram displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

19. 4433984 Lance Havildar AMRIK SINGH, Sikh Light Infantry.

On the 4th February 1968, at 0500 hours, while crossing a Pass in Jammu and Kashmir, Lance Havildar Amrik Singh and 4 ORs were overtaken by an avalanche and all were buried under ice and snow. By struggling hard, Lance Havildar Amrik Singh managed to extricate himself. Unmindful of his own safety and despite the danger of another avalanche, he made relentless efforts and succeeded in extricating all the ORs and their weapons and equipment.

In this action, Havildar Amrik Singh displaced initiative and devotion to duty in the best traditions of the Army.

20. 4043120 Rifleman BALWANT SINGH BISHT, Garhwal Rifles.

On 5th October 1968, Rifleman Balwant Singh Bisht was a member of a patrol which was detailed to establish contact with an Engineer detachment marooned in a village near Tista River during floods in North Bengal. The entire area was under 6 to 8 feet of water and the current was very fast. Enroute, the patrol saw a young child precariously clinging to a tree crying for help. The leader of the patrol ordered the boat to proceed towards the child. The boat was swept away by the fast current three times thus hampering the rescue of the child. On the fourth run-in, Rifleman Balwant Singh Bisht, at great personal risk, jumped into the water to steady the boat and keep it close to the tree and this enabled the party to rescue the child.

In this action, Rifleman Balwant Singh Bisht displayed courage and initiative.

21. 4539272 Sepoy ANANDA LONDHE, Mahar. (*Posthumous*)

On the night of 8th/9th October 1967, when his patrol came under fire from Pakistani positions in an area in Jammu and Kashmir, and one of his companions was killed, Sepoy Ananda Londhe came out from his position which had some cover and started firing with a Light Machine Gun on the Pakistani positions. He continued firing until he received a burst from a medium Machine Gun in the head and died.

In this action, Sepoy Ananda Londhe displayed courage and determination.

No. 17-*Pres.*/69.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Commander NORMAN JOSEPH SALDANHA, I.N.

At 0845 hours on 14th May 1968, INS BEAS and RANJIT were exercising off Daman when a distress message was received that SS 'BHARAT RATNA' had run aground and was breaking up on the MALACCA Bank off GOPNATH Point. Commander Saldanha, who was in command of INS BEAS, took charge of both the ships and proceeded towards the scene of the accident. At about 1500 hours, he reached the spot, but did not consider it prudent to lower a boat in view of the inclement weather. There were no signs of life on board or in the vicinity of the wreck. He detached INS RANJIT to proceed on her assigned mission and anchored his own ship in the vicinity of the wreck. At about midnight information was received that the Master of SS 'BHARAT RATNA' was still on board. Notwithstanding bad weather and pitch darkness, he organised a rescue party consisting of three officers and five sailors and lowered a motor whaler. The party rescued the Master of SS 'BHARAT RATNA'.

In this operation, Commander Norman Joseph Saldanha displayed leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

2. Lieutenant Commander MADHUSUDAN KONDATH, I.N.

On 14th May 1968, INS BEAS was exercising off Daman, when a distress message was received that SS 'BHARAT RATNA' had run aground and was breaking up on the MALACCA Banks off GOPNATH Point. At about midnight on receipt of information that the Master of SS 'BHARAT RATNA' was still on board, the Commanding Officer of INS BEAS called for a volunteer crew to proceed to the wrecked ship and rescue the Master. Lieutenant Commander Kondath volunteered and took charge as Coxwain of the motor whaler which was lowered in extremely difficult conditions. Despite adverse weather conditions, he proceeded with two officers and five sailors and reached the wrecked ship after 45 minutes. After effecting the rescue, the motor whaler had to proceed against the wind and tide and took almost 2 hours to reach the ship. Although the boat was in constant danger of being swamped, the crew, under the able leadership of Lieutenant Commander Kondath, ultimately managed to bring the whaler near INS BEAS and it was hoisted on board the ship.

In this operation, Lieutenant Commander Madhusudan Kondath displayed courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

3. Lieutenant JASWINDER SINGH BRAR, I.N.

On 14th May 1968, INS BEAS was exercising off Daman when a distress message was received that SS 'BHARAT RATNA' had run aground and was breaking upon the MALACCA Bank off GOPNATH point. On receipt of information that the Master of SS 'BHARAT RATNA' was still on board, the Commanding Officer called for a volunteer crew to proceed to the wrecked ship and rescue the Master. Lieutenant Jaswinder Singh Brar, the Senior Engineer, volunteered and accompanied the rescue party. While the Master of the wrecked ship was being rescued in extremely difficult conditions, he personally secured the life-line around the Master and assisted him while he was being hauled on board INS BEAS.

In this operation, Lieutenant Jaswinder Singh Brar displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

4. ROSHAN LAL, Chief Engineering Mechanic, (No. 60660).

Prior to proceeding to sea on 18th September, 1967, for important exercises, serious damage occurred to the funnel uptake and in the machinery spaces of a major was vessel. It became necessary to carry out emergency repairs under conditions of extreme heat and contaminated air due to leakage of poisonous gases. A team of sailors, led by Chief Engineering Mechanic Roshan Lal, worked round the clock for 48 hours and completed the task commendably which enabled the ship to participate in the exercises according to schedule.

In this operation Chief Engineering Mechanic Roshan Lal displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

5. GUJJAR MAL DOGRA, Petty Officer Engineering Mechanic, (No. 64903).

On 26th July 1968, while taking charge as duty Petty Officer Mechanic (Engineering) in No. 2 Boiler Room in INS CAUVERY, Petty Officer Gujjar Mal Dogra observed that bilges were flooded and that the level of the water was dangerously close to the sprayers. He immediately took action to hasten pumping out operations which had been suspended for effecting repairs to the General Service Pumps. Within five minutes of his arrival, the thin film of oil on the bilge water caught fire. He ordered other personnel to leave the boiler room, and acting on his own initiative, extinguished the fire thereby avoiding a major catastrophe.

In this action, Petty Officer Gujjar Mal Dogra displayed exemplary courage, initiative and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

6. ONKAR CHAND, Mechanician (IV), (No. 46458).

On 14th May 1968, INS BEAS was exercising off DAMAN when a distress message was received that SS 'BHARAT RATNA' had run aground and was breaking up on the MALACCA Bank off GOPNATH Point. On reaching the site, the Commanding Officer learnt that the Master of the wrecked ship was still on board. Mechanician Onkar Chand volunteered to accompany the rescue party in the motor whaler and assisted in running the engine. Throughout the rescue operation which lasted for about 3 hours, he looked after the engine and often had to use his bare hands to cover the hot cylinder cowling to prevent ingress of water into the engine, as a result of which his hands were blistered. In this operation, Mechanician Onkar Chand displayed courage and devotion to duty.

7. VIJENDRA KUMAR KASHYAP, Seaman (Class I), (No. 88332)

On 14th May 1968, INS BEAS was exercising off DAMAN when a distress message was received that SS 'BHARAT RATNA' had run aground and was breaking up on the MALACCA Bank off GOPNATH Point. On reaching the spot, the Commanding Officer sent a rescue party of which Seaman Vijendra Kumar Kashyap was a member in a motor whaler to rescue the Master of the wrecked ship who was reported to be still on board. His action during the rescue operation in leaning well out of the whaler and hauling the Master on board against the effect of high wind and raging sea, in utter disregard of his personal safety, was highly commendable.

No. 18-*Pres.*/69.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Air Commodore MAHESHWAR DAS KHANNA (2776) General Duties (Pilot)

Air Commodore Maheshwar Das Khanna was commissioned in the Indian Air Force in 1943. During most of his service career he has been employed on fighter pilot duties and has carried out approximately 3500 hours of accident free fighter flying. He took part in the operations in Burma during World War II and also participated in Jammu and Kashmir Operations, 1947-48, Goa Operations in 1961, and the India-Pakistan conflict of 1965. He has held important flying and staff appointments directly connected with air operations. After taking over the Command of a Wing, he built up the operational capabilities and flying qualities of all Units based at this Wing within a remarkably short period. In addition to his normal duties, he was instrumental in training 60 extra pilots, both in Mystere and Gnat aircraft, to fully operational status.

Throughout, Air Commodore Maheshwar Das Khanna displayed professional skill and organising ability.

2. Group Captain HEMANT RAMA KRISHNA CHITNIS (2964) General Duties (Pilot)

Group Captain Hemant Rama Krishna Chitnis was one of the few instructors to qualify from the United Kingdom and to hold an Instructor's appointment in the Flying Instructors' School. He has over 3,500 hours of accident free flying record, of which about half is on instructional flying duties. As a Squadron Commander, he not only ensured conversion of his Squadron to Hunter aircraft, but also made it achieve high operational efficiency in a short time. Subsequently, with praiseworthy initiative, drive and organising ability, he successfully executed the task of raising a fighter-bomber wing in the Eastern Sector.

Throughout, Group Captain Hemant Rama Krishna Chitnis displayed initiative, organising ability and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

3. Group Captain JAGDISH BEHARI LAL (3646) General Duties (Pilot)

Group Captain (then Wing Commander) Jagdish Behari Lal commanded a Transport and M/R Squadron for nearly 3 years and throughout this period maintained the highest transport category and instrument rating. In spite of his multifarious duties of a Squadron Commander, he flew a total of over 800 hours on Super-Constellation aircraft. It was during his tenure that the Super-Constellation aircraft was modified for M/R role and it was under his direction that intensive trials were carried out and the aircraft quickly made operational in the new role. He ensured that every M/R and A.S.S.R. task entrusted to the Squadron was fully met. The manner in which various commitments were fulfilled by the Squadron under Wing Commander Lal's able leadership earned appreciation from all concerned.

Throughout, Group Captain Jagdish Behari Lal displayed professional skill, resourcefulness and leadership.

4. GROUP CAPTAIN SAROJ JENA (3157) General Duties (Pilot)

Group Captain Saroj Jena commanded the I.A.F. Canberra Detachment in the Congo during April-October 1962. His Squadron rendered valuable service. He himself flew 10 sorties on reconnaissance missions. During the period December 1962 to May 1965, he commanded another Squadron. Under his able guidance the Squadron fulfilled all the tasks allotted to it creditably. Group Captain Jena took over Command of Air Force Station, Palam, in January 1967 and was responsible for organising the fly-past during Republic Day 1967 and 1968. He was also responsible for the intricate flight planning, safety of air-craft and correct timings of the aircraft participating in the Air Power Demonstration held at Tilpat on 31st March 1968.

Throughout, Group Captain Saroj Jena displayed courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

5. Wing Commander KARAN YADAV (4200) General Duties (Pilot)

For nearly four years Wing Commander Karan Yadav has been employed in a unit of the Air Force whose function is to examine by tests and intensive trials all practical

problems of flying and maintenance of new aircraft in service, and to conduct armament trials for safety of carriage, accuracy and effectiveness of the weapons system. He has completed nearly 500 hours of flying on these arduous duties. In carrying out service trials of indigenously produced Hindustan Fighter and the Kiran aircraft, he has been instrumental not only in improving the operational performance of these aircraft but also in rectifying the defects found in an aircraft in its early stages of development. He has played a significant part in the development of aeronautics industry in the country and in solving several problems associated with other aircraft in use in the service.

Throughout Wing Commander Karan Yadav displayed initiative, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

6. Wing Commander NIRMAL CHANDRA SURI (4236), General Duties (Pilot)

Wing Commander Nirmal Chandra Suri has has been commanding a fighter Squadron since August 1966. There was an operational requirement to evolve a modification for release of armament stores from the type of aircraft in his Squadron to enhance its fire power. This modification, which was a major one, was personally supervised by Wing Commander Suri. The modification has not only enhanced the fire power of the I.A.F. but also saved a large amount of foreign exchange. Wing Commander Suri has flown about 3,500 including 175 hours by night on single engine aircraft. When posted to the staff of the aircrew Examining Board for a period of 3½ years, he acted as Examiner on six different types of aircraft including Jets. During this period he flew over 600 hours for instrument rating of pilots and categorisation of the flying instructors.

Throughout, Wing Commander Nirmal Chandra Suri displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

7. Wing Commander RANJIT KUMAR KUKAR (4103), General Duties (Pilot)

As Officer Commanding an Air Force Unit, Wing Commander Ranjit Kumar Kukar has displayed great initiative, organising ability and resourcefulness in maintaining a very high standard of serviceability of his Squadron. He has borne the responsibility of training over 100 pilots on the strength of the Squadron and at the same time has run three courier services per week. This he has ensured notwithstanding the fact that the Squadron had limited resources and had no established Station for administrative support. Despite these handicaps, under his able guidance, there has been all round improvement in the operational status of the Squadron. A large number of pilots and navigators have qualified for both day and night operations including paratrooping and this has enabled the Squadron to make available a number of categorised pilots and navigators also to other Squadrons.

Throughout, Wing Commander Ranjit Kumar Kukar displayed initiative, organising ability and resourcefulness.

8. Wing Commander SATYA PAL VARMA (MR-690), Medical (AM-P)

Wing Commander Satya Pal Varma has been serving as Officer-in-Charge, Human Engineering Wing of the Air Force School of Aviation Medicine since June 1964. Prior to joining this unit, he qualified as a pilot on jet aircraft with the idea of contributing more effectively to his role as medical officer in the Air Force. As an Adviser on Human Engineering problems associated with the design and development of HF-24 and HJT-16 aircraft at Hindustan Aeronautics Limited at Bangalore, he contributed to the enhancement of comfort and safety in flying these aircraft. In view of his achievements in the human Engineering field, he was appointed as Human Engineering Coordinator in India of the Commonwealth Advisory Aeronautical Research Council. In addition to his being a doctor and a pilot, Wing Commander Varma is a competent electronics engineer and has designed a prototype biotelemetric equipment or the physlological monitoring of pilots in flight, which has won praise from the Armed Forces Medical Research Committee.

Throughout, Wing Commander Satya Pal Varma displayed professional skill, resourcefulness and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

9. Wing Commander SURAJ PRAKASH DUTT (3649), General Duties (Pilot)

Wing Commander Suraj Prakash Dutt, as Officer Commanding of a fighter Squadron, was personally responsible for his Squadron having flown a total of 1906 hours from December 1967 to May 1968 against heavy odds and low serviceability of the aircraft of his Squadron. Despite enormous problems due to acute shortage of trained personnel and equipment, with determination and able leadership, he brought up the operational readiness of his Squadron and accomplished the difficult task of training operational aircrew to a high standard of efficiency.

Throughout, Wing Commander Suraj Prakash Dutt displayed courage, initiative and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

10. Squadron Leader AJIT KUMAR CHOUDHURY (5063), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Ajit Kumar Choudhury has been serving with Fighter Training Wing since November 1965. As a Flying Instructor, he has flown a total of 2,000 hours. On 16th May 1968, he was authorised to carry out general flying and aerobatics sorties on a Vampire aircraft with a pupil pilot. At the end of the sortie after carrying out a roller take off, he heard a loud thud and noticed the R.P.M. winding down with the complete loss of power in the engine. The aircraft had gained only 300 feet of height and was flying at 170 knots. Squadron Leader Choudhury took immediate action to gain height. With exceptional skill and cool courage, he landed the aircraft safely.

11. Squadron Leader JOGINDER PAUL SINGH (4911), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Joginder Paul Singh is an outstanding officer of the Transport Training Wing and has to his credit 1,670 instructional hours and 1,308 operational flying hours out of a total of 5,800 hours of accident-free flying. His contribution towards improvement in standards of instructional flying is praiseworthy.

Throughout, Squadron Leader Joginder Paul Singh displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

12. Squadron Leader NARAYANA IYER VENKATARAMANI (5369), General Duties (Pilot)

During his eleven years of service, Squadron Leader Narayana Iyer Venkataramani has flown 5,900 hours including 2,400 hours on instructional duties on four different types of aircraft. He has flown a total of 900 operational hours in NEFA, Nagaland and Mizo Hills. He was responsible for converting a large number of under training pilots to fully operational status capable of undertaking hazardous missions. After joining the Air-crew Examining Board as Air Force Examiner, he has been instrumental in achieving a phenomenal rise in the categorisation/instrument rating state of the Air Force.

Throughout, Squadron Leader Narayana Iyer Venkataramani displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

13. Squadron Leader PADMANABHA ASHOKA (4653), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Padmanabha Ashoka has been actively associated with flight test duties in a Testing Unit. He has been largely responsible for expanding the flight envelope of the HF-24 aircraft. He has also been responsible for recommending a modification for better rates of roll on this aircraft. Due to his efforts, enough information on single engine performance, radii of action in the ground attack role, thurst boundaries, techniques for aerobatic manoeuvres etc. of HF-24 aircraft was gathered, thus assisting in getting the aircraft operational early.

Throughout, Squadron Leader Padmanabha Ashoka displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

14. Squadron Leader QAISAR ALI (4651), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Qaiser Ali during his fourteen years of service has flown a total of 3,550 hours including 1,600 hours as an instructor on jet fighter and bomber aircraft. He spent four years as flight commander at a Bomber Conversion Unit and was responsible for training a large number of bomber pilots, who displayed a very high standard

of professional skill during the 1965 conflict. He served as an instructor in the United Arab Republic with distinction for two years. After his posting to Aircrew Examining Board in August 1966, he has carried out the duties of aircrew instrument ratings and recategorisation tests of instructors with dedicated zeal and thoroughness. He has also been responsible for standardisation of bomber operating proceudres.

Throughout, Squadron Leader Qaisar Ali displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

15. Squadron Leader RAMESH CHANDRA SONDHI (4639), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Ramesh Chandra Sondhi has been on the strength of a Squadron since November 1965 and is currently employed as a Training Officer. During this period, the operational potential of the squadron was low as experienced crew were gradually posted out. Despite this, he not only completed his own conversion in the shortest possible time but also took upon himself the challenge and worked non-stop to improve the operational potential of the squadron by imparting training of an exceptional standard. He has a total of 7,515 flying hours to his credit. Throughout he has displayed a very high standard of professional skill, perseverance and unswerving devotion to duty in the highest traditions of the Indian Air Force.

16. Squadron Leader RAM KUMAR SINHA (4974), General Duties (Pilot)

Squadron Leader Ram Kumar Sinha has served three tenures in Jammu and Kashmir, Ladakh and NEFA. As a transport pilot, he completed over 1,000 hours of flying in fixed wing transport aircraft. During the Chinese aggression in 1962 and India-Pakistan conflict of 1965 he evacuated over 700 casualties from forward posts. For this, he made over 2,000 landings on unprepared areas in difficult terrain. He has carried out numerous proving and evaluation flights to new helipads. He has frequently been called upon to render service in aid to civil authorities. He flew many sorties carrying medical supplies and food and water for the marooned people after the cyclone at Rameshwaram and Dhanushkodi. On another occasion, disregarding his personal safety, he evacuated a seriously ill mechanic of the Posts and Telegraphs Department by helicopter and thus saved his life.

Throughout, Squadron Leader Ram Kumar Sinha displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

17. Squadron Leader RAJENDRA DEV PANT (4737) General Duties (Pilot)

Squadron Leader Rajendra Dev Pant is the Officer Commanding of a Helicopter Unit and has flown 1,079 operational hours on helicopters, including 450 hours in his present assignment, in the Eastern Sector, NEFA, Nagaland, Mizo Hills etc. He has evacuated over 150 casualties. On 19th July 1968, when a message was received that a very serious casualty required evacuation from a difficult helipad at high altitude, Sqaudron Leader Pant, despite hazardous terrain and adverse weather conditions, volunteered to undertake the evacuation. Immediately on his landing at the helipad the weather deteriorated, but Squadron Leader Pant, with his professional knowledge and courage, skillfully took off observing a little gap in the clouds, and brought back the serious casualty to the hospital and thus saved his life.

Throughout, Squadron Leader Rajendra Dev Pant displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

18. Squadron Leader SATISH CHANDER MOHAN (5041) General Duties (Pilot)

Squadron Leader Satish Chander Mohan has a distinguished record in both operational and instructional flying and has a total of 5,570 flying hours to his credit, including 2,720 hours in operational areas and 1,265 hours of instructional flying. He has always volunteered for difficult tasks in adverse conditions over difficult terrain. He has throughout maintained high operational preparedness of his Squadron in all its multifarious roles by organising and carrying out training by day and night of all categories of crews.

Throughout, Squadron Leader Satish Chander Mohan displayed courage, initiative and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

19. Squadron Leader SADANAND KULKARNI (5292) General Duties (Navigator)

Squadron Leader Sadanand Kulkarni during his eleven years of service as a Navigator has flown 3,150 hours out of which 1,320 hours are as an instructor. He holds transport category 'A' and Q. N. I. category A1. In his instructional tenure of four years, he has displayed instructional skill and flying standard of the highest order. He has had the distinction of passing out his pupils as best nevigators in airwork in three consecutive courses. As a navigator in M. R. Squadron, he flew 1,125 hours on Liberator aircraft and was responsible for training a large number of U/T navigators into skilful and operationally sound maritime navigators, radar operators and bomb aimers.

Throughout, Squadron Leader Sadanand Kulkarni displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

20. Squadron Leader SWATANTRA KUMAR GOEL (4684) General Duties (Pilot)

Squadron Leader Swatantra Kumar Goel was posted to Air Headquarters Communication Squadron in December 1963 as a pilot on Dakota aircraft for carrying high dignitaries. On the introduction of HS-748 aircraft to the Unit he was among the first to qualify for carrying V.I.Ps. Subsequently, he also qualified on TU-124 aircraft. He has flown over 1,700 hours in the Squadron of which over 900 hours are on VIP flights. He has also to his credit nearly 350 hours of instructional flying. He is also the Type Examiner on HS-748 aircraft.

Throughout, Squadron Leader Swatantra Kumar Goel displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

21. Flight Lieutenant AVINASH CHANDER CHOPRA (7604) General Duties (Pilot)

Flight Lieutenant Avinash Chander Chopra has been serving with a Helicopter Unit since August 1967. During this period he has undertaken a number of rescue and casualty evacuation missions and carried out about 600 hours of operational flying. In July 1967, in adverse weather conditions, he made many sorties in search of a transport aircraft which had crashed. Finally, he succeeded in reaching the scene of the crash and located the wreckage. He took calculated risk in landing at a kutcha helipad and succeeded in evacuating the lone survivor.

Throughout Flight Lieutenant Avinash Chander Chopra displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

22. Flight Lieutenant GURMIT SINGH MAAN (7668), General Duties (Pilot)

On 4th January 1968 Flight Lieutenant Gurmit Singh Maan was returning from a combat training sortie in a fighter aircraft when he found his longitudinal control jammed. Repeated attempts failed to clear the restriction either in power or manual control and he was left only with the electrical trimmer. Undaunted, with excellent airmanship, he carried out a perfect landing with his control trimmer alone and thus saved a valuable aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Gurmit Singh Maan displayed courage and professional skill.

23. Flight Lieutenant HAROLD CLEMENT DEMOS (6891) General Duties (Pilot)

Flight Lieutenant Harold Clement Demos has been a helicopter pilot since 1963 and has flown over 900 operational hours which involved over 1,000 operational sorties in the forward areas. He has always volunteered for operational missions. He carried out supply dropping missions in Nagaland. In September 1967 when the Nanak Sagar Dam burst causing havoc to the surrounding civilian population, livestock and property, he carried out many sorties under severe and trying conditions. On another occasion, he evacuated 2 casualties at the risk of his own life from an area covered with 15 feet of snow. On 8th April 1968 when an Air Force Officer, ejected from an aircraft 30 miles south east of Kanpur and was seriously injured, he disregarding his personal safety, took off from Kanpur in darkness and reached

the scene of the accident, picked up the Air Force Officer and brought him safely to Kanpur airfield.

Throughout, Flight Lieutenant Harold Clement Demos displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

24. *Flight Lieutenant* MRIGENDRA NARAYAN SINGH (10384) General Duties (Pilot)

Flight Lieutenant Mrigendra Narayan Singh has been engaged in active helicopter operations in Nagaland, NEFA and Mizo Hills since August 1963. He has flown a total of 1,093 hours out of which 55 hours were on operational missions. Most of the flying has been over hazardous and inaccessible terrain. He has carried out many sorties for casualty evacuation and for carrying troops in the vicinity of hostile elements. His willingness to fly on difficult missions in adverse weather and inhospitable terrain, has set an inspiring example to his juniors.

Throughout, Flight Lieutenant Mrigendra Narayan Singh displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

25. Flight Lieutenant MANJIT SINGH SEKHON (6756) General Duties (Pilot)

Flight Lieutenant Manjit Singh Sekhon has been serving in one of the Helicopter Units in the Eastern Sector. On a number of occasions, he has successfully carried out supply dropping and casualty evacuation from extremely difficult places at grave personal risk. He has completed 1,100 hours of operational flying in Helicopters in NEFA, Nagaland and Mizo Hills. In addition, he has been carrying out instructional duties and has always been setting an example to others.

Throughout, Flight Lieutenant Manjit Singh Sekhon displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

26. Flight Lieutenant TARLOK SINGH DHALIWAL (6350) General Duties (Pilot)

Flight Lieutenant Tarlok Singh Dhaliwal is serving as a pilot in a transport Squadron engaged in an air maintenance role in the eastern regions. He is a qualified flying Instructor and has flown a total of 3,360 hours out of which 1,650 hours are on operational missions. During the Chinese aggression in 1962, he carried out many supply dropping sorties. His intimate knowledge of the terrain of NEFA and Mizo Hills and his experience in carrying out numerous landing at Advance Landing Grounds has been very useful in the training of junior pilots. He has been a source of great inspiration to his junior colleagues.

Throughout, Flight Lieutenant Tarlok Singh Dhaliwal displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

27. 201000 Master Warrant Officer KANIYATH RAGHAVA MENON
Flight Engineer (*Posthumous*)

201000 Master Warrant Officer Kaniyath Raghava Menon joined the Indian Air Force in 1947. He started his career as a Flight Engineer on Liberators in 1955 and later converted on to the Super-Constellations. In 1955 he was posted to a Transport Squadron where he started flying as a Flight Engineer. He had flown 4,000 hours which included numerous air landings on Advanced Landing Grounds and supply dropping missions. It was during one of the operational supply dropping missions that he lost his life.

Throughout, Master Warrant Officer Kaniyath Raghava Menon displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

28. 48040 Warrant Signaller BABAJI SHRIPATRAO MORE
Signaller/Air

Warrant Signaller Babaji Shripatrao More has been serving with Heavy Transport Squadron in Jammu and Kashmir since April 1963. He has volunteered for most of the difficult sorties and has flown a total of nearly 6,350 hours including about 2,660 hours on operations. During the India-Pakistan conflict in 1965, he had flown more than 102 hours. He has also carried out more than 1,060 sorties on supply dropping and landings at Advance Landing Grounds. By his experience and intimate knowledge of the terrain, he has helped a great deal in fulfilling the task allotted to his unit.

Throughout, Warrant Signaller Babaji Shripatrao More displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

29. 48861 Warrant Signaller JASWANT JIT SINGH
Signaller/Air

Warrant Signaller Jaswant Jit Singh has been serving with a heavy transport Squadron in Jammu and Kashmir since March 1963. Earlier, he had served in two transport squadrons employed in air-lift in Jammu and Kashmir. He has a total of 4,250 hours of flying to his credit of which 1,520 are operational flying hours. He has always volunteered for hazardous operational missions.

Throughout, Warrant Signaller Jaswant Jit Singh has displayed courage, professional skill and high devotion to duty.

30. 202348 Warrant Signaller JAGDISH SINGH GILL
Signaller/Air

Warrant Signaller Jagdish Singh Gill has been serving with a Heavy Transport Sqaudron since May 1961. He has flown a total of 6,800 hours out of which 3,000 hours have been on operational sorties. His vast experience has always been of great help in the planning and execution of his Section's task. He has been responsible for training and conversion of many signallers, in spite of the heavy Squadron commitments. On 25th November 1966, when on a cross country flight No. 2 engine of the aircraft caught fire, Warrant Signaller Gill displayed cool courage and great presence of mind by helping the crew in bringing the situation under control. Not only was two way communication maintained throughout the flight, but also diversionary airfield was alerted to meet the emergency.

Throughout, Warrant Signaller Jagdish Singh Gill displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

NAGENDRA SINGH, Secy. to the President.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

RULES

New Delhi, the 12th April 1969

No. 8/3/69-CS-II.—The rules for a limited departmental competitive examination for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service to be held by the Union Public Service Commission in December, 1969 are published for general information.

2. The number of persons to be selected for inclusion in the select list will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservations shall be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Scheduled Castes/Tribes Lists (Modification) Order, 1956, read with Scheduled Castes and Scheduled Tribes Order (Amendment) Act, 1956, the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes, Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964, and the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in the Appendix to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. Any permanent or regularly appointed temporary Lower Division Clerk of the Central Secretariat Clerical Service, who on the 1st July 1969 satisfies the following conditions, shall be eligible to appear at the examination :—

(1) Length of service.—He should have rendered not less than 5 years' approved and continuous service in :—

(a) the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service, or

(b) any other grade under the Central or a State Government, the minimum and the maximum of the scale of pay of which were not less than Rs. 55/- and Rs. 130/- respectively, prior to 1-7-1959, and are not less than Rs. 110 and Rs. 180/- respectively, on or after 1-7-1959.

NOTE :—The limit of 5 years of approved and continuous service will also apply if the total reckonable service of a candidate is partly as a Lower Division Clerk in the Central Secretariat Clerical Service and partly elsewhere, as mentioned in (a) and (b) above respectively.

(2) *Age.*—He should not be more than 40 years of age *i.e.*, he must not have been born earlier than 1st July, 1929.

NOTE :—The age limit of 40 years will apply to the examinations to be held in 1969 and 1970 only. Thereafter the age limit will be 30 years.

Provided that the upper age limit may be relaxed in respect of the following categories of persons :—

(i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

(ii) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January 1964;

(iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;

(iv) up to a maximum of five years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;

(v) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vi) up to maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vii) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu;

(viii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);

(ix) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(x) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(xi) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof; and

(xii) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof, who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMIT PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

(3) Typewriting test.—Unless exempted from passing the Commission's typewriting test for the purpose of confirmation, in the Lower Division Grade, he should have passed this test on or before the date of notification of this examination.

(4) No candidate who does not belong to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe or is not a resident of the Union Territory of Pondicherry or is not a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu or is not a migrant from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) shall be permitted to compete more than 3 times at the examination, this restriction being effective from the examination to be held in 1969.

NOTE 1.—A candidate shall be deemed to have competed at the examination if he actually appears in any one or more subjects.

NOTE 2. Lower Division Clerks who are on deputation to ex-cadre posts with the approval of the competent authority will be eligible to be admitted to the examination, if otherwise eligible.

This, however, does not apply to a lower division clerk who has been appointed to an ex-cadre post or to another Service on "transfer" and does not have a lien in the lower division grade.

5. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

6. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

7. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated document or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination, or of using or attempting to use unfair means in the examination hall or of misbehaviour in the examination hall, may in addition to rendering himself liable to criminal prosecution,—

(a) be debarred permanently or for a specified period by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and

(b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules.

8. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may be held by the Commission to be a conduct which would disqualify him for admission to the examination.

9. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

10. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade up to the required number.

Provided that any candidate belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes, who though not qualified by the standard prescribed by the Commission, is declared by them to be suitable for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade with due regard to the maintenance of efficiency of administration, shall be recommended for inclusion therein up to the number reserved for members of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes, as the case may be.

NOTE.—Candidates should clearly understand that this is a competitive and not a qualifying examination. The number of persons to be included in the Select List for the Upper Division Grade on the results of the examination is entirely within the competence of Government to decide. No candidate will therefore, have any claim for inclusion in the Select List on the basis of his performance in this examination, as a matter of right.

11. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission

will not enter into correspondence with them regarding the result.

12. Success in the examination confers no right to selection unless Government are satisfied, after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is eligible and suitable in all respect for selection.

13. A candidate, who afterapplying for admission to the examination or after appearing at it, resigns his appointment in the Central Secretariat Clerical Service, or otherwise quits the Service or severs his connection with it, or whose services are terminated by his Department or who is appointed to an ex-cadre post or to another service on 'transfer' and does not have a lien in the lower division grade, will not be eligible for appointment on the results of this examination.

This, however, does not apply to a Lower Division Clerk who has been appointed on deputation to an ex-cadre post with the approval of the competent authority.

M. K. VASUDEVAN, Under Secy.

APPENDIX

The examination shall be conducted according to the following plan :—

Part I. Written examination carrying a maximum of 300 marks in the subjects as shown in para 2 below.

Part II, Evaluation of record of service of such of the candidates as may be decided by the Commission in their discretion, carrying a maximum of 100 marks.

2. The subjects of the written examination in Part I, the time allowed and the maximum marks allotted to each paper will be as follows :—

Subject	Time allowed	Maximum Marks
(i) Essay & Precis writing	2 hours	100
(ii) Noting & Drafting and Office Procedure	2 hours	100
(iii) General Knowledge	2 hours	100

3. The syllabus for the examination will be as shown in the attached schedule.

4. All question papers must be answered in English.

5. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

6. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all of the subjects at the examination.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Deduction up to 5 per cent of the maximum marks in the written subjects will be made for illegible handwriting.

9. Credit will be given for orderly, effective and exact expression, combined with due economy of words in all subjects of the examination.

SCHEDULE

Syllabus of the Examination

(1) *Essay and Precis Writing* : An essay to be written in English on one of the specified subjects. Passages will usually be set for summary or precis.

(2) *Noting & Drafting and Office Procedure* :— The paper on Noting & Drafting and Office Procedure will be designed to test the candidates' Knowledge of Office Procedure in the Secretariat and Attached Offices and generally their ability to write and understand notes and drafts. Candidates are required to study the Manual of Office Procedure and the Rules of Procedure and conduct of business in the Lok Sabha and the Rajya Sabha for this purpose.

(3) *General Knowledge* : The paper on General Knowledge will be intended *inter alia* to test the candidates knowledge of Indian Geography as well as the country's administration, and current national and international events.

MINISTRY OF FINANCE

Department of Revenue and Insurance

New Delhi, the 31st March 1969

RESOLUTION

No. F. 7(2)-INS.II/67.—The term of the Committee to investigate into the causes of the present high level of expenses of the Life Insurance Corporation of India, which was last extended by Government upto 31st March, 1969 under the Ministry of Finance (Department of Revenue & Insurance) Resolution of even number dated the 2nd January, 1969, is hereby further extended upto 30th April, 1969.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

RAJ K. NIGAM, Dy. Secy.

MINISTRY OF HEALTH, FAMILY PLANNING, WORKS HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT

Department of Works, Housing and Urban Development

New Delhi, the 26th March 1969

RESOLUTION

SUBJECT : *Constitution of a Cost Study Team to study the cost of production in Government of India Presses vis-a-vis private presses.*

No. S&PII/27(5)/53-PI.—Consequent on the transfer of Shri C. E. James, Project Officer, Office of the Chief Controller of Printing and Stationery, as General Manager, Government of India Press, K. S. Roy Road, Calcutta, Shri A. C. Das Gupta, Controller of Printing (Norms), Office of the Chief Controller of Printing and Stationery, has been nominated as a Member of the Cost Study Team set up *vide* Ministry of Works, Housing and Supply Resolution No. S&PII/27(5)/PI, dated the 9th February, 1968, as amended in place of Shri James.

The terms of reference of the Team remains unchanged.

ORDER

(1) ORDERED that the Resolution be communicated to all Ministries of the Government of India.

(2) ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

P. PRABHAKAR RAO, Jt. Secy.

MINISTRY OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION

Department of Labour & Employment

New Delhi, the 26th March 1969

RESOLUTION

No. LWI(I)17(1)/68.—The term of the Study Group (constituted in the Government of India resolution No. LWI(I)31(1)/66-A, dated 17th August, 1967 published in the Gazette of India 2nd September, 1967, to undertake a factual study of the working and living conditions of the Railway Porters and Commissioned Vendors) which was extended upto 31st March, 1969 in the Resolution No. LWI(I)17(1)/68, dated the 20th December, 1968, published in the Gazette of India, dated the 4th January, 1969 is hereby extended upto 30th April, 1969.

ORDER

ORDERED that a copy of the resolution be forwarded to :—

(i) All State Governments.

(ii) Ministry of Railways.

(iii) All India Organisations of Employers and Workers.

(iv) National Federation of Railway Porters and Vendors, Hata Jagdish Prasad Lokmanganj, Charbagh, Lucknow.

(v) Members of the Committee.

(vi) Chief Labour Commissioner (Central), New Delhi.

(vii) Director, Labour Bureau, Simla.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

T. S. SANKARAN, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1969